TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शनिवार 07 | अक्टूबर 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :2 | अंक :31 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

एक लाख लीटर तेल.. 27 लाख दीये 30 लाख बाती.. जगमगाएंगे 51 घाट

अयोध्या में पहले से कहीं भव्य होगा दीपोत्सव, तैयारियां शुरू

लोक पहल

लखनऊ। अयोध्या में राम जन्म भूमि मन्दिर में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियों से पहले यहां दीपावली पर आयोजित होने वाले दीपोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गई है। जनवरी 2024 में अयोध्या में जन्मभूमि मंदिर के रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले पड़ने वाला दीपोत्सव इस बार ऐतिहासिक होगा। अयोध्या के घाट ही नहीं मठ मंदिर भी दीयों की रोशनी से जगमगा उठेंगे। दीपोत्सव के लिए योजना पर कार्य शुरू हो गया है। इस बार 27 लाख दीये जलाने का लक्ष्य रखा गया है जो पहले से कहीं ज्यादा है। इसके साथ ही उन दीयों में लगाने के लिए 30 लाख बाती की व्यवस्था भी की जा रही है।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा महा उत्सव से पहले पड़ने वाला इस बार का दीपोत्सव यादगार होगा। इसके लिए तैयारियां शुरू हो गयी हैं। इस बार दीपोत्सव 11 नवम्बर को है। इस बार 27 लाख दीयों से पूरी अयोध्या जगमग होगी। हर बार की तरह इस बार भी अवध विश्वविद्यालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है। अवध विश्वविद्यालय ने पूरा प्लान तैयार कर लिया है। अयोध्या के 51 घाटों पर दीये जलाए जाएंगे। अयोध्या का दीपोत्सव हर बार पहले से ज्यादा भव्य होगा।

शंखनाद : आठ से 10 अक्तूबर के बीच हो सकती है पांच राज्यों में चुनाव की घोषणा

नई दिल्ली एजेंसी। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा से पहले मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार ने पर्यवेक्षकों के साथ बैठक की। उन्होंने पर्यवेक्षकों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि धनबल के खतरे को पूरी तरह से नियंत्रित किया जाए। साथ ही चुनाव हिंसा मुक्त हों।

सूत्रों के मुताबिक, आयोग मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और मिजोरम में चुनाव का एलान 8 से 10 अक्तूबर के बीच कर सकता है।

नवंबर के दूसरे हफ्ते से दिसंबर के पहले सप्ताह के बीच मतदान कराया जाएगा और नतीजे 15 दिसंबर से पहले घोषित किए जा सकते हैं। चुनाव आयोग की दिन भर चली बैठक का मकसद आदर्श आचार संहिता प्रभावी ढंग से लागू हो और धन तथा बाहुबल चुनाव को किसी तरह प्रभावित न करें। साथ ही निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी चुनाव कराने के लिए चाक-चौबंद व्यवस्था सुनिश्चित हो।

सूत्रों के मुताबिक, वर्ष 2018 में हुए विधानसभा चुनावों की तर्ज पर इस बार भी राजस्थान, मिजोरम, तेलंगाना और मध्य प्रदेश में एक चरण तथा नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ में दो चरणों में मतदान हो सकता है।

लाइक..कमेंट..एक्शन.. नो एजुकेशन

महिला शिक्षकों ने बनाई रील बच्चों और अभिभावकों ने किया विरोध

लोक पहल

अमरोहा। प्राथमिक विद्यालय में महिला षिक्षकों ने शिक्षण को छोड़कर रील बनाने को प्राथमिकता दी। रील को लाइक और कमेन्ट करने के लिए बच्चों पर दबाव बनाया। अब परेशान बच्चों ने स्कूल के स्टाफको बदलने को लेकर धरना दिया है। मामला अमरोहा जनपद के खुंगावली के संविलियन विद्यालय का है। यहां महिला शिक्षकों पर रील प्रसारित कर छात्रों से लाइक करने का दबाव डालने का आरोप लगा है। इससे स्कूल का पठन-पाठन भी प्रभावित हो रहा है। विरोध में अभिभावकों के साथ बच्चे धरने पर बैठ गए। छात्र-छात्राओं ने स्टाफ बदलने की मांग रखी है। उन्होंने मांग पूरी होने तक विद्यालय जाने से भी इन्कार कर दिया है। इधर, डीएम ने तीन महिला अधिकारियों की जांच कमेटी गठित की है। विद्यालय की चार महिला शिक्षकों की रीलें कुछ दिन पहले प्रसारित हुई थीं। वह कई गानों पर डांस कर रही थीं।

इसे लेकर कुछ बच्चों ने भी आपत्ति की थी। उनका कहना था महिला शिक्षक अपनी वीडियो लाइक करने का दबाव बनाती हैं, मना करने पर पिटाई भी करती हैं। प्रकरण की जांच गंगेश्वरी की खंड शिक्षा अधिकारी आरती सिंह के माध्यम से की गई। उन्होंने अपनी रिपोर्ट बीएसए को सौंप दी है। विद्यालय के बच्चे अपने अभिभावकों के साथ गांव में बड़े मंदिर परिसर में इकठ्ठा हुए। उनका कहना है कि जब तक महिला शिक्षकों का तबादला नहीं होगा तब तक वह स्कूल नहीं जाएंगे। शिक्षक उन्हें पीटती हैं। स्कूल में पढ़ाती भी नहीं हैं। इस मामले में डीएम ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित की है।

उत्तर प्रदेश में महिलाएं होंगी सशक्त चलेगा अभियान

मुख्यमंत्री योगी 14 अक्टूबर को करेंगे अभियान का शुभारंभ

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार महिला सषक्तिकरण को बल प्रदान करने के लिए मिशन शक्ति को और अधिक मजबूती प्रदान करेगी। इसका शुभारंभ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 14 अक्टूबर को महिला सशक्तिकरण अभियान से करेंगे। 15 से 24 अक्टूबर तक सभी जिलों में रैलियों का आयोजन किया जाएगा। इस संदर्भ में मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने कहा कि मिशन शक्ति के अंतर्गत जिलों में सर्किलवार रैलियां निकालकर महिलाओं को जागरूक किया जाएगा।

मिशन शक्ति व सेफसिटी परियोजना की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि जल्द से जल्द 17 नगर निगमों एवं गौतमबुद्ध नगर को सेफसिटी घोषित किया जाए। सेफ सिटी घोषित होने के बाद संबंधित शहर सीसीटीवी कैमरों के निगरानी में रहेंगे।

इससे अपराध नियंत्रण में काफी मदद मिलेगी। सेफ सिटी परियोजना के तहत लगाए गए 21,968 में से 5,732 कैमरे कंट्रोल रूम से जोड़े जा चुके हैं। नए कैमरों के लिये 4,150 स्थान चिह्नित किए गए हैं। उन्होंने सिटी बसों व टैक्सियों में सीसीटीवी एवं पैनिक बटन लगाने का काम भी जल्द पूरा करने के निर्देश दिए हैं। अभियान के तहत पहले चरण में बीट में तैनात 1,100 महिला आरक्षियों को इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहन उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभिन्न जिलों में बनाए जा रहे 3,000 पिंक बूथों का निर्माण जल्द पूरा किया जाए।

मध्य प्रदेश में विजयीवर्गीय का खुला आफर, कांग्रेस को वोट नहीं तो 51 हजार का इनाम

नई दिल्ली एजेंसी। मध्य प्रदेश में भाजपा ने एक नया प्रयोग करते हुए अपने तीन केन्द्रीय मंत्रियों व चार सांसदों को विधानसभा चुनाव में मैदान में उतार दिया है। इनमें से कई मंत्री और सांसद अंदरखाने विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं थे लेकिन पार्टी के निर्णय के आगे उनकी एक न चली। इनमें से ही एक हैं भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय। हमेशा अपने बयानों को लेकर सुर्खियों में रहने वाले कैलाश विजयवर्गीय ने एक बार फिर विवादित बयान दिया है। उन्होंने पोलिंग बूथ पर कांग्रेस को एक भी वोट नहीं मिलने पर भाजपा के संबंधित 'बूथ अध्यक्ष' को 51,000 रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। विजयवर्गीय ने कहा कि भाजपा को आशीर्वाद दीजिए और कांग्रेस को इस बार वार्ड से एक भी वोट नहीं मिलना चाहिए, इसलिए मैंने इनाम की घोषणा की है।

बता दें कि बीजेपी ने आगामी मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में कैलाश विजयवर्गीय को इंदौर-एक सीट से उम्मीदवार बनाया है। विजयवर्गीय पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव हैं। इस बार पार्टी ने जब से एमएलए का टिकट दिया है, तब से उनके बयानों अक्सर सुर्खियों में आ रहे हैं। इससे पहले उन्होंने खुद को टिकट मिलने पर हैरानी जताई थी और खुद को 'बड़ा नेता' बताया था। कैलाश विजयवर्गीय ने इंदौर के वार्ड नंबर 7 में बीजेपी कार्यकर्ताओं की एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हम उस बूथ अध्यक्ष को 51,000 रुपये का इनाम देंगे, जहां कांग्रेस को एक भी वोट नहीं मिलेगा।

कांग्रेस व भाजपा में पोस्टर वार तेज

कांग्रेस ने मोदी को बताया जुमला बॉय तो भाजपा ने राहुल को दे दी रावण की संज्ञा

लोक पहल

नई दिल्ली। देश के पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव और लोकसभा के चुनाव से पहले भाजपा और कांग्रेस में पोस्टर वार तेज हो गया है। सोशल मीडिया पर जारी पोस्टर वार दिन-प्रतिदिन तेज होता जा रहा है। केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा ने एक्स पर राहुल गांधी का पोस्टर साझा किया, जिसमें उन्हें नए युग का रावण दिखाया गया है। अब अपने भाई की बचाव में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा उतर आई हैं। वह जमकर भाजपा पर भड़कीं और कहा कि क्या नरेंद्र मोदी अपने वादों की तरह कसमें भी भूल गए हैं।

वाड्रा ने सोशल मीडिया एक्स पर हिंदी में ट्वीट कर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जेपी नड्डा से पूछा कि वह राजनीति को गिरावट की कौन-सी मंजिल तक ले जाना चाहते हैं? आपकी पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से जो हिंसक और उकसाऊ ट्वीट किए जा रहे हैं, क्या उसमें आपकी सहमति है ? ज्यादा समय नहीं बीता, आपने शुचिता की कसम खाई थी। क्या वादों की तरह कसमें भी भूल गए हैं ?' इससे पहले कांग्रेस ने एक्स पर ही पीएम नरेंद्र मोदी की तस्वीर सबसे बड़ा झूठा शीर्षक के साथ साझा की थी। कांग्रेस के पोस्टरों के जवाब में भाजपा ने अपने आधिकारिक हैंडल पर राहुल गांधी का कई सिर वाला पोस्टर जारी किया। पोस्टर में कांग्रेस नेता को नए युग का रावण बताया गया है। साथ ही उन्हें धर्म विरोधी है, राम विरोधी है। इसका लक्ष्य भारत को नष्ट करना है। कांग्रेस सांसद मनिकम टैगोर ने कांग्रेस नेता को रावण के रूप में दिखाए जाने पर कहा कि भाजपा जैसी एक राष्ट्रीय पार्टी की ओर से इस तरह की प्रचारात्मक बातें दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय हैं। पीएम मोदी और जेपी नड्डा को इसका जवाब देना चाहिए। उन्हें इसके लिए माफी मांगनी चाहिए। विपक्षी नेताओं के प्रति इस तरह का हिंसक व्यवहार अस्वीकार्य है।

बाल ग्रह के बच्चों ने कागज में भरे कल्पनाओं के रंग

राजकीय बाल गृह में चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। वैसे तो अनाथ, बेसहारा , बेघर और समाज से उपेक्षित बालकों ने खुद को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए बच्चों ने अपनी कल्पनाओं के रंग जब कागज पर उकेरे तो सब अचंभित रह गए।मौका था राजकीय बाल ग्रह बालक में बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का। प्रतियोगिता का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर निवर्तमान बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष मुकेश सिंह परिहार एवं सदस्य सुयश सिन्हा, डॉ.अनिल कुमार तथा जिला युवा अधिकारी नेहरू युवा केंद्र मयंक भदोरिया ने किया। निर्णायक समिति के सदस्य के रूप में एसएस कॉलेज की चित्रकला विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर प्रिया शर्मा व रेनू बहुखंडी ने बालकों द्वारा बनाई गई पेंटिंग का परीक्षण किया गया तथा दोनों टीमों में से प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बालकों के नामों की घोषणा की। ए टीम से सागर प्रथम ,रोहतास द्वितीय ,शोभित तृतीय स्थान पर रहे तथा टीम बी से अमित प्रथम ,रोहित द्वितीय प्रियांशु तृतीय स्थान पर रहे तथा दो बालकों कृष्ण व

अमन को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर असिस्टेंट प्रोफेसर प्रिया शर्मा ने कहा कि बालकों द्वारा अच्छी एवम समाज को मैसेज देने वाली पेंटिंग बनाई गई जो की एक अच्छी बात है।प्रोफेसर रेनू बहुखंडी ने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की। नेहरू युवा केंद्र के युवा अधिकारी मयंक भदोरिया ने कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों के लिए बहुत आवश्यक हैं जिससे बालकों में कॉन्फिडेंस बढ़ता है और उनकी क्रिएटिविटी भी निखर जाती है विजेता रहे सभी बालकों को अतिथियों द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।कार्यक्रम के अंत में नेहरू युवा केंद्र के युवा अधिकारी मयंक भदोरिया द्वारा मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का आयोजन कर कलश में सभी से मिट्टी तथा अक्षत एकत्र किए गए तथा सभी को पांच प्रण की शपथ दिलाई व संस्था अधीक्षक नेमचंद्र को प्रतीक चिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन प्रतिभा मिश्रा ने किया।प्रतियोगिता के आयोजन बाल ग्रह बालक के मैट्रन राम विनय यादव, पर्यवेक्षक राम सूरत यादव बाल संरक्षण इकाई के संरक्षण अधिकारी निकेत कुमार सिंह , गुड्डू ,संतोष ,पुष्पा, पुनीत गुप्ता तथा एसएस ला कॉलेज के विद्यार्थियों का विशेष सहयोग रहा।

नैक कार्यशाला में गुणवत्तापूर्ण और जवाबदेही शिक्षा पर बल

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश-क्रिस्प की सहभागिता से राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) और राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रे मवर्क (एन.आई.आर.एफ) पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक प्रबुद्ध कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता की जटिलताओं को समझने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञों और संस्थागत प्रतिनिधियों का विशेष योगदान रहा।

स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मान्यता की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. बलराज चौहान, स्टेट लीडर, क्रिस्प और उनकी टीम शामिल रही। प्रो चौहान ने नैक और आई.क्यू.ए.सी. के महत्तव पर विस्तार से चर्चा की। नैक सलाहकार दिव्या ने नैक के मूल्यांकन मानदंड और मान्यता प्रक्रिया के बारे में बताया। वही एनआईआरएफ सलाहकार राहुल ने संस्थानों को एनआईआरएफ रैंकिंग में प्रतिभाग करने के महत्व पर जोर दिया।

कार्यषाला में प्रतिभागियों को नैक, आईक्यूएसी और एनआईआरएफ दिशानिर्देशों की व्यापक समझ हासिल करने में मदद की। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय और स्वामी शुकदेवानंद पी.जी. कॉलेज के प्रतिनिधियों ने शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत किया। कार्यशाला ने शिक्षा की गुणवत्ता और जवाबदेही सुनिश्चित करने, छात्रों के उज्जवल भविष्य को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाने पर बल दिया गया।

रक्तदान महादान-71 दानवीरों ने किया रक्तदान

■ कर्मयज्ञ संस्था ने तक्षशिला पब्लिक स्कूल में लगाया शिविर,रक्तदानियों को किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। सामाजिक संस्था 'कर्मयज्ञ' ने महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर तक्षशिला पब्लिक स्कूल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर का शुभारंभ होने के बाद लगातार कर्मयोगी आते रहे। संस्थापक सदस्य अभिषेक खण्डेलवाल व संयोजक नरेन्द्र मिड्ढा ने लोगों को प्रेरित किया। शिविर में खासकर पति-पत्नी ने साथ साथ रक्तदान किया। इसके बाद तक्षशिला पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य प्रखर खंडेलवाल, मिर्जापुर

ब्लाक प्रमुख प्रियांशु रघुवंशी और उनके भाई हिमांशु, व्यापारी नेता सुनील गुप्ता, अमृत लाल, मोहित मिड्ढा, विवेक तुली राजा, पदमहस्त दिवाकर मिश्रा, अजय शेखर द्विवेदी, मनोज गुप्ता गुड्डू, मनीषा श्रीवास्तव, संतोष श्रीवास्तव, हेमंत अनेजा, हर्ष झाम, सुखविंदर सिंह, वेदप्रकाश रावत, जितिन बजाज, प्रधुम्न गुप्ता, साहिल आनंद, रिद्धि बहल, मनु खंडेलवाल, बलराम शर्मा, मनीष सक्सेना, कीर्तिमान च्यवन एडवोकेट, अभिषेक अग्रवाल, नेहा अग्रवाल, जयसिंह यादव, हिमांशु सक्सेना मनु, सहित 71 लोगों ने रक्तदान किया। साथ ही सभी रक्तदानियों को उनकी फोटो फ्रेम के साथ प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर अरुण खंडेलवाल, डॉ मोनिका खंडेलवाल, डॉ दीप्ति दीक्षित, डॉ सबाहत हुसैन, छाया श्रीवास्तव, डॉ शिवम त्यागी, महेंद्र त्रिपाठी, आशीष सिंह, मोहम्मद तलीम, संदीप यादव का सहयोग रहा। व्यवस्था में सहयोग संयोजक संजीव मिश्रा, राजकुमार सक्सेना, डॉ आशीष अग्रवाल, अनुज श्रीवास्तव मौजूद रहे। सभी का आभार संयोजक नरेंद्र मिड्ढा ने व्यक्त किया।

शालिनी वाजपेयी, अनंत वाजपेयी, अभिनिका खंडेलवाल, गौरांग कुमार खंडेलवाल, आकांक्षा खंडेलवाल, राजीव कुमार, अनुज श्रीवास्तव,

रात में नगर आयुक्त ने लिया सफाई व्यवस्था का जायजा

शाहजहांपुर (लोक पहल)। नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा ने रात में सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। महानगर को साफएवं स्वच्छ रखने के लिए बहादुरगंज, पचराहा, सदर बाजार में रात में नगर निगम के स्वच्छता कर्मियों द्वारा किये जा रहे सफाई के कार्य का निरीक्षण कर सफाई व्यवस्था की स्थिति को देखा, साथ ही निर्देषित किया कि नगर में प्रतिदिन सफाई कार्य के साथ-साथ नगरवासियो को नगर निगम द्वारा प्रदान की जाने वाली समस्त सुविधाओं को प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराया जाए। इस मौके पर अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, मुख्य अभियंता सिविल एसके अम्बेडकर, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल ने समाजसेवी मोहित कुमार को किया सम्मानित

लोक पहल

श्रीनगर। गांधी शास्त्री जयंती के अवसर पर श्रीनगर में आयोजित कार्यक्रम में विनोबा सेवा आश्रम बरतारा के सचिव मोहित कुमार को जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने सम्मानित किया। मोहित कुमार को गाजीपुर जनपद में शिक्षा के मंदिरों को सुसज्जित करने के क्षेत्र में उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के साथ अनेक शैक्षिक कल्याणकारी कार्यक्रमों में काम किया है। डेढ़ सौ से अधिक प्राथमिक स्कूलों को सुसज्जित कर वहां के नामांकन और उपस्थिति को बढ़ाने

का अद्भुत काम किया था। उनकी इस उपलब्धि पर जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल के सलाहकार आलोक कुमार भटनागर यूटी के मुख्य सचिव अनूप कुमार मेहता तथा उच्च शिक्षा के प्रमुख सचिव आलोक कुमार की उपस्थिति में गांधी जयंती समारोह में देश के ग्यारह प्रदेशों के वरिष्ट गांधी जनों को भी आमंत्रित किया गया। आयोजन में पद्मश्री डा एस पी वर्मा का विशेष योगदान रहा। समारोह को विनोबा विचार प्रवाह के प्रमुख रमेश भइया, हरिजन सेवक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लक्ष्मीदास, अशोक कपूर, डा रंजना मुखोपाध्याय ने संबोधित किया।

राजकीय बाल गृह (बालक) में मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। नेहरू युवा केन्द्र के तत्वावधान में मेरी माटी मेरा देश, माटी को नमन, वीरों का वंदन कार्यक्रम का आयोजन राजकीय बाल गृह (बालक) में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अधीक्षक राजकीय बाल गृह नेमचंद, बाल कल्याण समिति के निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश सिंह परिहार, सदस्य सुयश सिन्हा, एसएस लॉ कॉलेज के प्रो डॉ अनिल कुमार, डा. प्रिया शर्मा, डा. रेनू बहुखंडी, जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। इसके उपरांत जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने मेरी माटी मेरा देश अभियान के बारे में बच्चों को जानकारी दी। सभी को पंच प्रण शपथ भी दिलाई गई। नेहरू युवा केन्द्र की ओर से अधीक्षक राजकीय बाल गृह को प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। आयोजन में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक रवि सक्सेना, राजकीय बाल गृह (बालक) के समस्त स्टाफव विधि के छात्र छात्राओं का सहयोग रहा।

आज भी प्रासंगिक है गांधी का दर्शनः सुरेश खन्ना

■ वर्तमान परिवेश में गांधी की प्रासंगिकता विषय पर गोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। वित्त एवं संसदीय कार्यमंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि महात्मा गांधी ने सत्य एवं अहिंसा को अपने जीवन का आधार बनाया। सत्य हर युग में प्रासंगित है और रहेगा। श्री खन्ना शहर के सत्यम इम्पीरिया में गांधी साप्ताहिक समाचार पत्र की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी 1915 में मुम्बई में कपड़े पहनकर निकले इस दौरान उन्होंने एक भारतीय महिला को आधी साड़ी में अपना शरीर छुपाते देखा तब से उन्होंने तन पर आधी धोती पहननी शुरू कर दी। अनेक स्थानों पर उनकी वेष भूषा को लेकर तमाम तरह की टिप्पिड़या की गई लेकिन उन्होंने कोई समझौता नहीं किया। इसी कारण गांधी पूरे विश्व में पूज्यनीय हुए और विश्व में लगभग 100 देशों से अधिक देषों में गांधी की मूर्तियां लगी हैं। श्री खन्ना ने कहा कि गांधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा का नाम है। गांधी का पूरा जीवन एक दर्शन है उन जैसा जिद्दी और विद्यमान व्यक्ति दूसरा नहीं हुआ। गांधी ने ग्राम स्वराज और कुटीर उद्योगों को अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताया था।

आजादी के बाद सरकारें अगर गांधी की परिकल्पना पर चलती तो आज देश में न तो बेरोजगारी और न ही इतनी वैमनस्यता बढ़ती। हरिजन सेवक संघ दिल्ली की राष्ट्रीय सचिव उर्मिला बहन ने कहा कि गांधी का रास्ता कठिन है लेकिन उनके मानकों पर चले बिना समाज और राष्ट्र का विकास संभव नहीं। विशिष्ट अतिथि रूहेलखण्ड विष्वविद्यालय की प्रो डा. रूचि द्विवेदी ने कहा कि गांधी ने जनभावनाओं को मात देकर परंपरागत राष्ट्रवाद को परिस्कृत कर आने वाले पीढ़ी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया।

आयोजित भाषण प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि मंत्री सुरेश खन्ना, सांसद मिथिलेश कुमार, एमएलसी सुधीर गुप्ता आदि ने सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में राजकीय महाविद्यालय कांट की नैंसी सिंह, जीएफ कालेज के एसएस कालेज के सचिव डा. अवनीश मिश्रा ने कहा कि महात्मा गांधी जितने प्रासंगिक आजादी से पूर्व थे उतने ही प्रासंगिक आज भी है और भवष्यि में भी रहेंगे। इस दौरान जनपद के महाविद्यालयों में वर्तमान परिवेश में गांधी की प्रासंगिकता विषय पर हिमांशु शुक्ला, एसएस कालेज की सारष्वत पांडे, आर्य महिला डिग्री कालेज की ईशा श्रीवासतव, राजकीय महाविद्यालय तिलहर के वैभव वर्मा व राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद के विजय कुमार शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. सुरेश मिश्रा ने किया। मुख्य अतिथि श्री खन्ना को यशेन्द्र शाह, शिखर सिंह, अशोक कुमार सिंह, पुनीत मनीषी व जुहेब रिजवी ने अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया, अतिथियों का स्वागत कुलदीप दीपक, मोहम्मद इरफान, सुयश सिन्हा, ऐशान्या मनीषी, पार्षद अनूप कुमार गुप्ता आदि ने किया। अंत में सभी का आभार समाचार पत्र के संपादक ओंकार मनीषी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेन्द्र यादव, भाजपा महानगर अध्यक्ष शिल्पी गुप्ता, डा. पीके अग्रवाल, डा. आकाश श्रीवास्तव, डा. एसपी मिश्रा, डा. विजय पाठक, डा. आनंद अग्रवाल, डा. गौरव कौशल, डा. नीरज अग्रवाल, नवनीत पाठक, विमला बहन, राकेश मिश्रा अनावा, ब्लाक प्रमुख नमित दीक्षित, श्रीदत्त शुक्ला, शहनाबाज खान, पार्षद दिवाकर मिश्रा, सुधीर कुमार गुप्ता, रामचन्द्र सिंघल, राम निवास गुप्ता, सुरेश चन्द्र सिंघल, हरगोविन्द मोदी, प्रमोद प्रमिल, अल्पना श्रीवास्तव, सरकार शर्मा सहित तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे।

बच्चों ने रैली निकालकर दिया स्वच्छता का संदेश

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम' की धुन पर बढ़ाए कदम

लोक पहल

शाहजहांपुर। महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्र की जयंती पर स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली गई। स्वच्छता रैली को जनपद न्यायाधीष भानुदेव शर्मा, जिला विधिक प्राधिकरण के सचिव पियूष तिवारी, डीआईओएस हरिवंष कुमार व बीएसए रणवीर सिंह ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। जीआईसी मैदान से निकाली गई रैली में बच्चे गांधी जी के प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम' की धुन गाते हुए चल रहे थे। गांधी व शास्त्री के रूप में बच्चों की झांसी को लोगों ने काफी सराहा।

अटसलिया स्कूल के स्काउट गाइड बैण्ड की अगुवायी में कम्पोजिट विद्यालय बहादुरगंज, रोटी गोदाम कस्तूरबा गांधी विद्यालय, राजकीय इण्टर कालेज, मदरसा नूरूलहुदा, इस्लामियां इण्टर कालेज, गुरूनानक कन्या हाईस्कूल, सुदामा प्रसाद इण्टर कालेज, आकांक्षा इण्टर कालेज, देवी प्रसाद बालिका जू.हा. स्कूल, आर्य कन्या पाठशाला, आर्य महिला इण्टर कालेज आदि स्कूल के बच्चे रैली में शामिल हुए।

रैली का संचालन जिला स्काउट कमिश्नर निकहत परवीन और जिला स्काउट गाइड कैप्टन दपिन्द्र कौर ने किया। रैली में चरखा चलाते गांधी जी की पेन्टिंग आकर्षण का केन्द्र रही।

रैली में अफजल हुसैन, सगीर अहमद, राजन प्रजापति, राजीव अग्रवाल, राम सिंह, शैलेन्द्र सिंह, महंत कुमार, संजय कुमार कपूर आदि का विशेष सहयोग रहा इसके अलावा इन्हरव्हील क्लब की अध्यक्ष नीलम गुप्ता, निधि मिश्रा, ज्योति गुप्ता, कंचन खन्ना, रजिन्द्र कौर, रेखा मोदी आदि ने भी रैली में शामिल होकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।

विजय ठाकुर 'गांधी' व ज्ञान और आशीष 'दिशा' सम्मान से सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। वरिष्ठ गीतकार विजय ठाकुर को गांधी पुरस्कार तथा वरिष्ठ कवि और साहित्यकार ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' और प्रकृति प्रेमी आशीष भारद्वाज को दिशा सम्मान से सम्मानित किया गया।

शहर के गांधी पुस्तकालय में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि मनरेगा के डिप्टी कमिश्नर बाल गोविन्द शुक्ला पुस्तकालय सचिव अजय गुप्ता व उपाध्यक्ष डा. हरिओम त्रिपाठी ने विजय ठाकुर को अंगवस्त्र, महात्मा गांधी की ताम्र प्रतिमा, श्रीफ ल व प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया। वहीं ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' को अंगवस्त्र व महात्मा बुद्ध की प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र व श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। आशीष भारद्वाज को अंगवस्त्र, प्रशस्ति पत्र व तुलसी का पौधा भेंटकर सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर समारोह में तमाम साहित्यकारों व कवियों ने गांधी जी व शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला व काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन ललित हरि मिश्रा ने किया। इस दौरान कमल शुक्ला शील, डा. सुरेश मिश्रा, इकबाल हुसैन उर्फ फूल मियां, आतिश मुरादाबादी, विकास शर्मा, ललित पल्लव, अभिषेक औचित्य, कमल मानव, दीपक कंदर्प, राजेश्वर दयाल पाठक, रवि मिश्रा, प्रवीण कुमार, सर्वेश कुमार, आशा गुप्ता, विकास सोनी, सुशील दीक्षित, पीयूष शर्मा सहित बड़ी संख्या में कवि और साहित्यकार मौजूद रहे।

राजकीय बाल ग्रह में खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन,विजयी प्रतिभागी पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए राजकीय बाल ग्रह बालक में खेल कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें बालकों की क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, दौड़, नींबू दौड़, बोरा दौड़ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। नींबू दौड़ जूनियर वर्ग में मनदीप, कृष्णपाल ,सूरज ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया सीनियर वर्ग में सूरज फर्स्ट, सूरज सेकंड व अमित ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। बोरा दौड़ सीनियर में हर्ष ने प्रथम शोभित ने द्वितीय तथा सूरज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया ।जूनियर में सुशील ने प्रथम कपिल ने द्वितीय व कमल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा बड़े बच्चों में रेस प्रतियोगिता में अमित ने प्रथम रोहित ने द्वितीय व विक्की ने तृतीय स्थान प्राप्त किया बैडमिंटन प्रतियोगिता में सुशील,सोहिल, रोहतास, कपिल, ने विजय प्राप्त की वॉलीबॉल प्रतियोगिता में सागर, रोहित,

दिलशाद, राकेश, आसिफ, सद्दाम की टीम विजई रही क्रिकेट प्रतियोगिता में ए टीम ने चार ओवर में 28 रन बनाये। जवाब में बी टीम मात्र 22 रन पर ऑल आउट हो गई बालक अमित को मैन ऑफद मैच घोषित किया गया। खेलकूद की प्रतियोगिताओं की निर्णायक समिति के सदस्य एवं मुख्य अतिथि के रूप में निवर्तमान बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष मुकेश सिंह परिहार व सदस्य सुयश सिन्हा ने विजयी बालकों को पुरस्कृत किया। बाल ग्रह बालक के अधीक्षक नेम चंद्र ने सभी आवंतुको का आभार व्यक्त किया। खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन में क्रीड़ा विभाग से आए मुनाहिद अली हॉकी कोच व आसू भारती फुटबॉल कोच,बाल गृह बालक के नर्स राम विनय यादव, पर्यवेक्षक राम सूरत यादव बाल संरक्षण इकाई के संरक्षण अधिकारी निकेत कुमार सिंह, काउंसलर प्रतिभा मिश्रा, सामाजिक कार्यकर्ता पूनम गंगवार बाल ग्रह के अन्य स्टाफगुड्डू ,संतोष व पुष्पा का विशेष सहयोग रहा।

धरोहर

सराय काइयां जहां जैनों का पहला कारवां उतरा था

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

पक्का पुल पार करके दक्षिण की ओर मुड़ कर, तारापाठक स्कूल के सामने से गुजरते हुए जब आप थोड़ी चौड़ी हो गयी सड़क पर निकलेंगे तो पुलिस चौकी के सामने से सड़क का एक हिस्सा मूल सड़क से छिटक कर ऊपर की ओर वेसाख्ता भागता दिखाई देगा है। कभी यहां एक विशाल टीला हुआ करता था। खन्नौत के उपजाऊ किनारे ने इसे हरा भरा कर दिया था। इसके अंतिम सिरे पर एक शक्तिपीठ है जिसमें कभी मैंने एक संस्कृत विद्यालय चलते देखा। यह जो ऊंचा स्थान है यही सराय काइयां कहलाता है। लोग रिदम में इसे कइयन सराय भी कहते हैं। मेरे एक मित्र पूछने लगे कि क्या मतलब हुआ इसका? क्या यहां कोई सराय थी जिसमें केवल काइयां लोग ही रुक सकते थे अथवा इसके संचालक काइयां थे। अटपटे नाम का कारण भी अटपटा होना चाहिए। मैंने इस बारे में किताबें टटोलीं तो पता चला की मुगलकालीन युग में जैनों का एक काफ्लिा इस स्थान पर उतरा था जो यहीं बस गया। जैनों की जीवन शैली आम लोगों की जीवन शैली से भिन्न होती हैं। खानपान और पहनने ओढ़ने के उनके अपने कुछ नियम होते हैं। वे इन नियमों का बहुत सख्ती से पालन करते हैं। अहिंसा के प्रति उनकी सतर्कता श्लाघीय है। शाम होते ही मुंह पर मास्क लगा लेते हैं ताकि कोई कीट मुँह में न घुस जाए और हिंसा हो जाए। शेष समाज में इसे बहुत आश्चर्य से देखा गया और इसे काइयांगीरी माना। जैन समुदाय शहर के जिस हिस्से में रहा उसका नाम ही सराय काइयां रख दिया जो बाद में यही स्वीकृत नाम हो गया। यहां बसे जैन लोगों ने आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु भगवान का एक भव्य मंदिर बनवाया। नगर में जैनियों का यह आज भी एक मात्र मंदिर है, अस्तु! आगे चल कर किन्हीं कारणों से यह बस्ती उजड़ गयी। स्थान वीरान हो गया और मंदिर खंडहर। जैन समुदाय के लोग या तो शहर में फैल गए या बाहर चले गए। लोग भूल गए कि यहाँ कभी एक मंदिर था। सालों साल बीत गए, समय कई सदी आगे खिसक गया। लोगों को मोहल्ले का नाम याद रहा कारण नहीं। कालांतर में खंडेलवाल परिवार वहां आ कर बस गया। इन दिनों हार्डवेयर का उनका भारी कारोबार केरूगंज में है। इस परिवार के पास वह हिस्सा भी आ गया जिसमें बंद भग्न प्राचीन मंदिर था द्य जिले का इकलौता जैन मंदिर द्य कहते हैं कि ईश्वरीय प्रकाश छिपता नहीं। लगभग सौ साल पहले खंडेलवाल परिवार के मुखिया को चन्द्रप्रभु भगवान ने सपने में मंदिर के बारे में बताया। सुबह जागने पर उन्होंने मंदिर को खोल कर उसकी साफसफाई कराई और भगवान का विधिवत पूजन किया। मुखिया के पौत्र प्रदीप जैन ने बताया कि उनके बाबा ने बाद में जैन धर्म अपना लिया। अब वे अपने नाम के आगे खंडेलवाल की जगह जैन लिखने लगे। बाबा के शेष तीनों भाई अपने मूल धर्म में ही रहे । बाद में मंदिर को और भी भव्य रूप दिया गया। यद्यपि अब वहां जैन बस्ती नहीं है। जो भी हैं वे प्रदीप जी के ही खानदान के जैन खंडेलवाल हैं फिर भी मंदिर आज भी आस्था का केंद्र है और जैन समुदाय का अपने धर्म से जुड़े पर्वों पर मेला भी लगता है। मोहल्ले का सराय काइयां नाम भी जैनों के आगमन की याद दिलाता है। यह आश्चर्य की बात है कि सराय काइयां से उजड़ने के बाद नगर में बसे जैन समुदाय ने कभी अपनी कालोनी या मोहल्ला बनाने को कोशिश नहीं की। यद्यपि यह समुदाय समृद्ध है और कोई जैन कालोनी मोहल्ला बनाना उनके लिए कोई कठिन काम नहीं था। हो सकता है कि कम संख्या होने कारण ऐसा हुआ ही अथवा कई जैन परिवार आजादी के बाद एक एक कर यहां आये हो जिसके चलते जिसे जहां जगह मिली बस गया। जो भी हो सराय काइयां का भव्य जैन मंदिर शाहजहांपुर की प्राचीन विरासत है और भारतीय संस्कृति को विविधता देने वाला भी।

नगर निगम में जयंती पर याद किये गए बापू और लाल बहादुर शास्त्री

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर निगम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह एवं नगर निगम के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों ने महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। कार्यक्रम में नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और उनके पदचिन्हों पर चलने की अपील की। इस अवसर पर नगर निगम के समस्त अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

विश्व शिक्षक दिवस पर डॉ. अवनीश का हुआ सम्मान

लोक पहल

शाहजहांपुर, एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग में विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर विभाग के संस्थापक शिक्षकों में से एक और प्रथम विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. मिश्र को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. मिश्र ने कहा कि शिक्षक जीवन भर छात्र भी रहता है। विभागाध्यक्ष डॉ. अनुराग अग्रवाल ने कहा कि शाहजहांपुर जनपद में कॉमर्स को स्थापित करने में डॉ. मिश्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने एक शिक्षक, एक विभागाध्यक्ष और एक प्राचार्य के रूप में काम करते हुए वाणिज्य शिक्षा को नवीन आयाम प्रदान किए हैं। संचालन डॉ. रूपक श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर विभाग के शिक्षकों द्वारा डॉक्टर मिश्र को एक स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर डॉ. देवेंद्र सिंह, डॉ. कमलेश गौतम, डॉ. विजय तिवारी, डॉ. अजय कुमार वर्मा, डॉ. संतोष प्रताप सिंह , डॉ. सचिन खन्ना। बृजराली, अपर्णा त्रिपाठी, अखंड प्रताप सिंह, डॉ. अरुण यादव आदि मौजूद थे।

/ सम्पादकीय /

सियासत के नवाचार

2०24 के लोकसभा चुनाव की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। सभी दल चुनाव में फतह हासिल करने के लिए नए–नए प्रयोग कर रहे हैं। इन दिनों कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी जहां कुछ अलग तरह की सियासत करते दिखाई दे रहे हैं वहीं भाजपा भी राजनीति नए प्रयोग करने से नहीं चूक रही है। बात यदि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की की जाए तो भारत जोड़ो यात्रा के बाद उनका सियासी सफर कुछ अलग अंदाज में आगे बढ़ता दिखा है। किसानों के साथ किसान, ट्रक ड्राइवरों से मुलाकात व रेलवे स्टेशन पर कुली बनने वाले राहुल का यह अंदाज और सियासत साधने का तरीका भाजपा में बेचैनी पैदा कर रहा है ऐसा नहीं कि राहुल बिना किसी रणनीति के समाज के विभिन्न वर्गो से यूं ही मुलाकात कर रहे है। मौसम सियासी है तो हर चाल भी चुनावी ही होगी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी दिल्ली के आनंद बिहार रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए, उन्होंने वहां न केवल कुलियों के साथ बात कर उनकी समस्याओं को समझा बल्कि खुद भी सर पर सामान उठाकर कुली की भूमिका निभाते दिखाई दिए। माना जा रहा है कि राहुल की इस नए तरीके की सियासत को भाजपा द्वारा उनके खिलाफ अमीर नेता होने का जो माहौल बनाया गया था उसकी काट है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राहुल को एसी रूम में बैठने वाला नेता, शहजादे और चांदी का चम्मच लेकर पैदा होने वाले नेता आदि विश्लेषणों से नवाजा था। प्रधानमंत्री को इसका जवाब देते हुए राहुल गांधी ने करीब साढ़े चार हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा कर किसानों, व्यापारियों, नौजवानों, महिलाओं, बुजुर्गो से लेकर दलित आदिवासी तक से मुलाकात की, उनकी समस्याओं को समझा। आज के युग में राजनीति परसेप्शन की हो गई है और इस माहौल में यह सब काफी मायने रखता है। राजनीति में इस तरह के नेरेटिव कभी कभी कमाल कर जाते हैं और कई मौकों पर जातीय समीकरण भी इसके आगे ध्वस्त होते दिखाई दिए हैं। वहीं अगर भाजपा की बात की जाए तो पार्टी ने मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनाव में एक साथ तीन केन्द्रीय मंत्रियों सहित चार साथियों को विधायक के टिकट देकर प्रदेश की राजनीति में हड़कंप मचा दिया। भाजपा ने केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, प्रहलाद पटेल और फग्गन सिंह कुलिस्ते के अतिरिक्त केन्द्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, सांसद राकेश सिंह, गणेश सिंह, उदय प्रताप सिंह व रीति पाठक को विधानसभा का टिकट देकर मैदान में उतार दिया। बताया जा रहा है कि भाजपा ने हारी हुई सीटों पर कद्दावर नेताओं को उतारकर जीतने की जिम्मेदारी सौंपी है। भाजपा के इस नए प्रयोग से मध्य प्रदेश की राजनीति में उबाल ला दिया है। एक तरफ जहां केन्द्रीय मंत्रियों के मैदान में उतरने से कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती होगी वहीं दूसरी ओर यह संदेश भी गया है कि मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनाव में भाजपा काफी कमजोर दिखाई दे रही है इसलिए उसने अपने केन्द्रीय मंत्रियों को विधायकी का चुनाव लड़ने के लिए मैदान में उतार दिया है। कुछ नेताओं में इसको लेकर असमंजस की स्थिति भी बनी हुई है। कुल मिलाकर कांग्रेस हो या भाजपा दोनो ही चुनाव से पहले नए प्रयोग करके विजयी हासिल करने के लिए प्रयासरत है। राजनीति में सेट किये जा रहे नेरेटिव और परसेप्शन कितने कामयाब होंगे यह तो आने वाला समय ही बतायेगा फिलहाल दोनो दल कुछ अलग तरह की राजनीति कर मतदाताओं को लुभाने का हर संभव प्रयास कर रहे है।

बलात्कार के दोषी कौन?

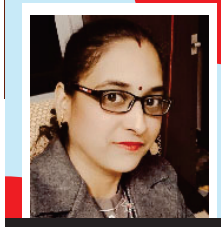

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला देश है और यहां अन्य देशों की तुलना में अपराध की दर भी अधिक है। बलात्कार भारत में चौथा सबसे आम अपराध है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2०19 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में 32,०33 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए या औसतन 88 मामले प्रतिदिन दर्ज किए गए। आए दिन बलात्कार की घटना में हम देखते हैं कि बाहर इतने बलात्कार होते हैं लेकिन जब घर में ही किसी के द्वारा किसी अपने का बलात्कार किया जाता है तो समाज में उस आदमी को सजा देने के लिए मामले दबा दिए जाते हैं और रात दिन उस औरत को कोसा जाता है जिसका बलात्कार हुआ है। उस औरत की अस्मत क्या इतनी सस्ती है कि उसे न्याय मिलने की बजाय जिंदगी भर का दर्द मिल जाता है। सामाजिक कलंक है बलात्कार लेकिन इस बलात्कार के दोषी होते कौन है? इस पर चर्चा कर रही हूं।

हमारे भारत में सबसे ज्यादा घटनाएं बलात्कार की है जिसमें नशा, पुरुषों की मानसिक दुर्बलता, महिलाओं का कमजोर आत्मविश्वास, एकांत में मवालियों का अड्डा, ढीला कानून, है। अभी तक की सारी रिपोर्ट देखी जाएं तो 85 प्रतिशत मामलों में नशा ही प्रमुख कारण रहा है। हमारे देश में नशा ऐसे बिक रहा है जैसे मंदिरों में प्रसाद। आपको हर एक किलोमीटर में मंदिर मिले ना मिले पर शराब की दुकान जरुर मिल जाएगी और शाम को तो लोग शराब की दुकान की ऐसी परिक्रमा लगाते हैं कि अगर वो ना मिली तो प्राण ही सूख जाएंगे। नशा आदमी की सोच को विकृत कर देता है। उसका स्वयं पर नियंत्रण नहीं रहता और उसके गलत दिशा में बहकने की संभावनाएं शत–प्रतिशत बढ़ जाती हैं। ऐसे में कोई भी स्त्री उसे मात्र शिकार ही नजर आती है।स्त्री देह को लेकर बने सस्ते चुटकुलों से लेकर चौराहों पर होने वाली छिछोरी गपशप तक और इंटरनेट पर परोसे जाने वाले घटिया फोटो से लेकर हल्के बेहूदा कमेंट तक में अधिकतर पुरुषों की गिरी हुई सोच से हमारा सामना होता है। पोर्न फिल्में और फिर उत्तेजक किताबें पुरुषों की मानसिकता को दुर्बल कर देती हैं और वो उस उत्तेजना में अपनी मर्यादाएं भूल बैठता है और यही तनाव ही बलात्कार का कारण होता है। ईश्वर ने नर और नारी की शारीरिक संरचना भिन्न इसलिए बनाई कि यह संसार आगे बढ़ सके। परिवेश में घुलती अनैतिकता और बेशर्म आचरण ने पुरुषों के मानस में स्त्री को मात्र भोग्या ही निरूपित किया है। यह आज की बात नहीं है बल्कि बरसों–बरस से चली आ रही एक लिजलिजी मानसिकता है जो दिन–प्रतिदिन फैलती जा रही है। हमारी सामाजिक मानसिकता भी स्वार्थी हो रही है फलस्वरूप किसी भी मामले में हम स्वयं को शामिल नहीं करते और अपराधी में व्यापक सामाजिक स्तर पर डर नहीं बन पाता। महिलाओं का अगर आत्मविश्वास प्रबल हो तो कोई भी पुरुष उनसे टक्कर नहीं ले सकता।महिलाओं को शारीरिक रूप से सबल बनना चाहिए और वो मन से भी खुद मजबूत समझें।विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की ट्रेनिंग उन्हें बचपन से ही मिलनी चाहिए। हमारा समाज लड़कियों की परवरिश इस तरह से करता है कि लड़की खुद को कमजोर और डरपोक बनाती चली जाती है। हमें अपनी बेटियों को निडर बनाना चाहिए। महिलाओं को अपने साथ अपनी सुरक्षा के साधन हमेशा साथ रखने के लिए हमें उन्हें जागरूक करना चाहिए। महिला अगर डरी–सहमी, खुद को लाचार समझती है तो उसे परेशान करने वालों का विश्वास कई गुना बढ़ जाता है। महिला की बॉडी लैंग्वेज हमेशा आत्मविश्वास से भरपूर होना चाहिए। अगर भीतर से असुरक्षित महसूस करें तब भी अपनी बेचौनी से उसे जाहिर ना होने दें, गांव और शहर के सुनसान खंडहरों की बरसों तक जब कोई सुध नहीं लेता है तब यह जगह आवारा और आपराधिक किस्म के लोगों की समय गुजारने की स्थली बन जाती है। फार्म हाऊस में जहां बिगड़ैल अमीरजादे इस तरह के काम को अंजाम देते हैं वहीं खंडहरों में झुग्गी बस्तियों के गुंडे अपना डेरा जमाते हैं। बड़े–बड़े नेता अफसर उद्योगपति लोग अपना फार्म हाऊस बना लेते हैं, और वहां हकीकत में होता क्या है ये कोई सुध नहीं लेता। यह जगह पुलिस और प्रशासन से दूर जहां इन लोगों के लिए श्सुरक्षितश् होती है वहीं एक अकेली स्त्री के लिए बेहद असुरक्षित। महिला के चीखने–पुकारने पर भी कोई मदद के लिए नहीं पहुंच सकता। बलात्कार के 6० द्ब5द्बह्न%द्बह्न केस में ऐसे ही मामले सामने आए हैं। हमारे देश का कानून लचर है, ये सब मानते हैं। अगर कानून सख्त हो तो शायद अपराधिक मामलों की संख्या बहुत कम हो जाती। कमजोर कानून और इंसाफ मिलने में देर भी

बलात्कार की घटनाओं के लिए जिम्मेदार है। देखा जाए तो प्रशासन और पुलिस कमजोर नही हैं, कमजोर है उनकी सोच और समस्या से लड़ने की उनकी इच्छा शक्ति। पैसे वाले जब आरोपों के घेरे में आते हैं तो प्रशासनिक शिथिलताएं उन्हें कटघरे के बजाय बचाव के गलियारे में ले जाती हैं। पुलिस की लाठी बेबस पर जितने जुल्म ढाती है सक्षम के सामने वही लाठी सहारा बन जाती है। अब तक कई मामलों में कमजोर कानून से गलियां ढूंढ़कर अपराधी के बच निकलने के कई किस्से सामने आ चुके हैं। कई बार सबूत के आभाव में न्याय नहीं मिलता और अपराधी छूट जाता है। अंततः आज हमें बलात्कार को धर्म, मजहब के चश्मे से नहीं देखना चाहिए। बलात्कारी कहीं भी हो सकते हैं, किसी भी चेहरे के पीछे, किसी भी बाने में, किसी भी तेवर में, किसी भी सीरत में। बलात्कार एक प्रवृति है उसे चिन्हित करने, रोकने और उससे निपटने की दिशा में यदि हम सब एकमत होकर काम करें तो संभवतः इस प्रवृत्ति का नाश कर सकते हैं।

तकनीकी दौर में पुस्तकें

डा. कनक रानी पूर्व प्राचार्य

सोशल मीडिया द्वारा डाले गए एक फोटो में पुस्तकें अपनी मौजूदा स्थिति को उजागर कर रही थीं। पुस्तकों की उपेक्षात्मक स्थिति ही है कि पुस्तकें फुटपाथ पर दिख रही हैं और जूते शोरूम में सज रहे हैं। ज्ञान के आलोक में जीवन संवारने का सामर्थ्य रखने वाली पुस्तकों का फुटपाथ पर बिकना तो हतप्रभ करने वाला है। पादुकाओं, सौंदर्य प्रसाधनों, फैशन के अनुरूप वस्त्रों आदि के बड़े–बड़े शोरूम भौतिक प्रगति को सूचित कर रहे हैं। इन सबके पीछे एक प्रश्न अवश्य छूट रहा है। किसी भी शहर में क्या पुस्तकों के भी ऐसे नवीन भव्य शोरूम विस्तार पा रहे हैं? निस्सन्देह, यह परिदृष्य मानव की परिवर्तित होती हुई मनोवृत्ति को सूचित कर रहा है। परिवेष में बदलती हुई धारणाओं को प्रदर्षित कर रहा है।

बीते समय अतिथि कक्ष में बेहतरीन पुस्तकों से गृहस्थ की वैचारिक उत्कृष्टता–सुरुचिप्रियता मुखरित होती थी। ये पुस्तकें पाठकों–आगन्तुकों का मन सहज ही खींच लेती थीं। यही नहीं, पुस्तकों पर स्वतः परिचर्चा प्रारंभ हो जाती। यह पुस्तकें जीवन को अनुप्राणित करती थी। विचारों का नवांकुरण करती थीं। किंतु आज के वातावरण में पुस्तकों का स्थान भौतिक साज– सज्जा की वस्तुओं ने ले लिया। महाविद्यालय में अच्छी पुस्तकों को लेकर चलना मन को विशेष तृप्ति देता था। अमुक विषय में अमुक लेखक की पुस्तक विद्यार्थियों के मध्य विशेष लोकप्रियता को प्राप्त करती थी। किंतु आज ऐसे भाव विरले ही हो गए हैं। यह विचारणीय बिंदु है। ज्ञान–संचार की माध्यम इन पुस्तकों के संदर्भ में ऐसी विसंगति? कदाचित् यही कारण रहा कि विद्यार्थियों में पुस्तक पढ़ने की रूचि को बढ़ाने के उद्देष्य से अध्ययन दिवस का निर्धारण किया गया।

मार्केट में मॉडल पेपर्स, अनसाल्व्ड पेपर्स की सुलभता बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की संकुचित अध्ययन वृत्ति को संज्ञान में लाती है। एक तो शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की कम उपस्थिति पाठ्य पुस्तकों में झुकाव की कमी को दर्षाती है। दूसरे कुछ विद्यार्थियों की तो पढ़ने की चाहत के साथ विद्यालय में उपस्थिति ही नहीं होती। उच्च शिक्षा में हास–परिहास में निमग्न विद्यार्थियों की अन्यमनस्कता–पढ़ने में अरूचि से शिक्षाविद् भी कदाचित् अनजान नहीं। यूं तो लाइब्रेरी में पुस्तकों की बहुलता होती है किंतु यहां पुस्तकों में कम होते झुकाव को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। सच तो यह है कि मैगजीन– जर्नल्स–कॉमिक्स– पत्र पत्रिकाओं के प्रति रूझान भी कमतर हो गया है। वैसे भागदौड़ भरी जिंदगी में पुस्तकों से मिले मानसिक सुख का अपना ही महत्व है। कभी दिनचर्या में कुछ समय निकालकर पुस्तकालय जाने का पृथक् ही उत्साह रहता था। बदलते परिवेष में अब न तो पुस्तकों को पढ़ने का समय रहा और न ही विषेष इच्छा। वस्तुतः किताबें और मोबाइल दोनों ही ज्ञानार्जन का माध्यम हैं। जहां पुस्तकें ज्ञान का व्यापक स्रोत हैं, वहां स्मार्टफोन आदि भी जानकारी का सशक्त साधन। ई–पुस्तकों से पर्यावरणीय अनुकूलता को अस्वीकार नही किया जा सकता। पढ़ने की दृष्टि से यह परिवर्तन का काल है।

आज आनलाइन षिक्षण के साथ– साथ दूरस्थ षिक्षा भी अपनी उपादेयता के फलस्वरूप प्रचलन में हैं। पुस्तकालय ई–लाइब्रेरी में परिवर्तित हो रहे हैं। यहां ई–बुक्स किसी भी विषय से सन्दर्भित जिज्ञासा के त्वरित समाधान के लिए सुलभ हैं। मोबाइल, स्मार्टफोन, आईपैड, टैबलेट, कंप्यूटर द्वारा विस्तृत पठन सामग्री सहज ही प्राप्त की जा सकती है। हां, वांछित जानकारी सर्च करते समय इंटरनेट पर अतिरिक्त तथ्यों की बहुलता चित्त की एकाग्रता को बाधित कर सकती है। वैसे भी पाठकों की दृष्टि में गहन अध्ययन के लिए भौतिक रूप से पुस्तकों की उपयोगिता–आकर्षण को नकारा नहीं जा सकता। यह विडम्बना ही है कि युवाओं में ऑनलाइन पुस्तकों का भी कोई विषेष क्रेज नहीं। सम्भवतः बदलती परिस्थितियां पाठकों के अन्दर साहित्यिक सम्मोहन को प्रभावित कर रही हैं।

रेल यात्रा के दौरान पुस्तकें खरीदना, पढ़ना और समझना आनंद से पूर्ण करने वाला है। ये नीरसता से मुक्त रखती हैं। निस्सन्देह, अच्छी पुस्तक–विषय को कई बार पढने का अनिर्वचनीय सुख कोई अध्येता ही अनुभव कर सकता है। भौतिक पुस्तकें पाठक को जितना रस से सराबोर करती हैं, कदाचित ई–बुक्स से उतना तादात्म्य स्थापित नहीं हो पाता। तकनीकी दौर में पुस्तकें अपना भौतिक स्वरूप खो रही हैं। ई–बुक्स पाठक को विविध प्रकार से लाभान्वित करने के लिए तत्पर हैं। सुविधानुसार कहीं भी–कभी भी पढ़ने में सुगमता होना, डाउनलोड करना, खर्चीला न होना, इन सभी विशिष्टताओं से ई– बुक्स ने पढ़ना सुगम बनाया है। किंतु ई– बुक्स से विषय वस्तु के तारतम्य में अवरोध की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

ई–बुक्स के प्रभाव में विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन प्रणाली में भी बदलाव दिखाई देता है। उदाहरणार्थ कक्षा में दिए गए सामाजिक विषयों पर लेखन के लिए विद्यार्थी चिंतन– मनन हेतु उद्यत नहीं होते। कारण स्पष्ट है कि इंटरनेट में व्यक्ति को वांछित विषय की पर्याप्त जानकारी सुलभ है ही। मोबाइल से बिना प्रयत्न के ही डाटा भी उपलब्ध हो जाता है। फलतः विषय की गहराई में उतरने के लिए किए गए प्रयास भी उथले स्तर पर ही रह जाते हैं। इस तरह वैचारिक क्षमता–लेखन दषता–तर्कशीलता का अवरूद्ध होना अस्वाभाविक नहीं। प्रतिभा को निखारने की दृष्टि से छात्र जीवन में प्रयत्नलाघ्याव की प्रवृत्ति उचित नहीं। इससे श्रमहीनता को बढ़ावा मिल सकता है। अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा लगभग समान भावभूमि पर आधारित लेखन निराशाजनक स्थिति से अवगत कराता है। यह स्थिति विद्यार्थियों की मानसिक उर्वरता को प्रभावित करती है, विषय वस्तु में झुकाव के प्रति उदासीनता सूचित करती है। नवीन वाक्य विन्यास, भावों की प्रचुरता, स्वतंत्र अभिव्यक्ति शैली, जिज्ञासा का आविर्भाव, वैचारिक दक्षता को प्रभावित करती है।

मौखिक माध्यम के अनन्तर पुस्तकें ही लंबे समय से ज्ञान का संचार करती रही हैं। जिज्ञासा को शांत करने में मनुष्य की बेहतरीन साथी रही हैं। ये तो जीवन की अमूल्य निधि हैं। व्यक्तित्व– विकास के लिए अध्ययन को श्रेष्ठ विकल्प कहना अत्युक्ति नहीं। पुस्तकें जीवन पर अनेकानेक सुप्रभाव छोड़ती हैं। इनमें अभिरुचि रखने वाला व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों से सहज व प्रभावी ढंग से साझा करने का सामर्थ्य रखता है। अच्छे साहित्य में मन– मस्तिष्क के पोषण की योग्यता होती है। पढ़ते समय विषय वस्तु के तारतम्य से विचारों का नवप्रस्फुटन होता है।

पुस्तकें अच्छे विचारों से ऊर्जावान कर चरित्र निर्माण में सहायक बनती है, कला– संस्कृति– सभ्यता–साहित्य में प्रेम जगाती हैं। शब्द ज्ञान के विस्तार से–उत्कृष्ट विचारों की ऊर्जा से मस्तिष्क का व्यायाम कराती हैं। बाल्यकाल से ही हाथ में पुस्तकें सही मार्ग दिखाकर लक्ष्य को ओझल नहीं होने देतीं। नैतिक गुणों के माध्यम से मन:स्थिति का संस्करण करती हैं। पुस्तकें विचारों को परिपक्व बनाती हैं, संवेदनशील बनाती हैं। पुस्तके जीने की कला सिखाती हैं, स्वाभिमान आदि उच्च भावों से संयुक्त करती हैं। उचित दृष्टिकोण से परिस्थिति का आंकलन करना सिखाती हैं। महापुरुषों के व्यक्तित्व व कर्तृत्व से षिक्षित कर् चरित्र निर्माण करती हैं। देश– काल–वातावरण के अनुसार समाज से सामंजस्य बनाने हेतु प्रेरित करती हैं। व्यक्ति किताबों में इतना तल्लीन हो जाता है कि किताबें भी मानो व्यक्ति से संवाद करती हैं।

पुस्तकें सार्वकालिक शिक्षक हैं जो जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाने में सहायक हैं। यही नहीं, जीवन के तनाव को भी कुछ हद तक कम करती हैं। पुस्तकें अल्जाइमर, डिमेंशिया जैसी बीमारियों से दूरी बनाती है। सांस्कृतिक पुस्तकों– सकारात्मक लेखों को पढ़कर स्वयं में सुधारात्मक प्रभाव उत्पन्न करना एक उल्लेखनीय बिंदु है। पुस्तकें एकांत को सरस बनाती हैं। पुस्तकें आत्मबल बढ़ाती हैं। पुस्तकें विश्लेषण क्षमता में वृद्धि कर सही– गलत में निर्णय लेना सिखाती हैं। आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ने से मन शांत और संयमित होता है।

कोरोना काल में मोबाइल, लैपटॉप, ऑनलाइन शिक्षण ने पाठ्य पुस्तकों से दूरी बढ़ाने का कार्य किया। सोशल मिडिया भी पुस्तकों में रुझान की कमी का कारण है। पुस्तकों का महंगा होना भी इस दिषा में एक बड़ी बाधा है। गत समय ये पाठ्य पुस्तकें भी कई वर्ष तक उसी कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को हस्तांतरित होती रहती थीं। गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें लाइब्रेरी में भी स्थान पा लेती थीं। यही नहीं मनोरंजन प्रधान–ज्ञानवर्धक पुस्तकें रेंट पर भी उपलब्ध होती थीं। ध्यातव्य है कि इनके रख–रखाव के लिए उचित स्थान ही अपेक्षित रहा। एक लंबा जीवन होता है पुस्तकों का।

वर्तमान में पाठ्यक्रम की पृथक्ता–प्रवेश के समय नई पुस्तकों की खरीद ने पुरानी पाठ्य– पुस्तकों की महत्ता को न्यून कर दिया है। अन्ततः पुस्तक हो अथवा इंटरनेट, सही दृष्टिकोण के साथ वांछित विषय वस्तु को चुनने–पढ़ने–मनन करने की आवश्यकता है। ध्यातव्य है कि स्तरीय साहित्य को ही पढ़ना प्रभावकारी है। स्तरहीन विचारों को पढ़कर सकारात्मक ऊर्जा को अनुभव नहीं किया जा सकता।

अभागन

लघुकथा

टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला
छत्तीसगढ़

दुनिया में आने से पहले उसने अपना पिता खोया था। छः माह की थी कि माँ चल बसी थी। वह पैदा भी हुई थी ऐसे समय, कि उसका नाम 'अ' अक्षर से रखना पड़ा था। रिश्तेदार उसे अनिता, अनिला, अल्का आदि नामों से बुला लिया करते थे। सहेलियाँ अन्नू कहा करती थीं। आठवी कक्षा पढ़ते तक दादा-दादी भगवान को प्यारे हो गये थे। उम्र होने पर वैवाहिक जीवन में बंध गयी।

ससुराल गयी। निकम्मे पति से पाला पड़ा। सुबह से ही वह शराब की घूँट लेता पानी की जगह। दो बरस होते ही एक नन्हीं-सी जान किलकारियाँ भरने लगी। बेटा हुआ था उसका। मेहनत-मजदूरी करके गृहस्थी की गाड़ी खींचती रही कि एक दिन उसने एक बाईक-एक्सीडेंट में अपना पति खो दिया। आज वह गाँव के एक छोटे से बाजार में चना-मुर्रा का पसरा लगाये बैठी थी। पसरे से गुजरते हुए कुछ औरतें अपने बच्चों को चेता रही थी कि उस बुढ़िया से कुछ भी नहीं लेना। बड़ी अभागन है वह। बच्चों पर किसी अभागन की छाँह नहीं पड़नी चाहिए। आखिर बात सच भी तो थी घर में जवान विधवा बहू और दो अबोध बच्चे जो थे।

गज़ल

प्रदीप सहाय 'बेदार'
शाहजहांपुर

मुसलसल कोशिशें करके ये अड़ियल जीत जाता है
अगर जिद पर उतर आए तो पागल जीत जाता है॥
वो जब भी खूँ पसीने की फसल में माँग ले हिस्सा,
वहीं मजदूर की कोशिश से मलमल जीत जाता है॥
भले अपनी बुलन्दी के अहम में हो जर-ए-खालिस,
अगर घुंघरू में ढल जाए तो पीतल जीत जाता है॥
ये मेरा ताज इसकी आज इज्जत है बहुत फिर भी,
हर इक दस्तार से तो माँ का आँचल जीत जाता है॥
ये बच्चे तो हैं मुस्तकबिल करो तुम परवरिश इनकी,
नजर से दूर हो गुलशन तो जंगल जीत जाता है॥
जमाना जो कहे अपना अलग किरदार रखना तुम,
इसी तासीर से साँपों से सन्दल जीत जाता है॥
अजब दुनिया अजब दस्तूर है बेदार इज्जत का,
सो अक्सर ही कदम-बोसी में दलदल जीत जाता है॥

कभी सुबह तो कभी

बनते बिगड़ते रिश्तों का नाम है जिंदगी
कभी सुबह है तो कभी शाम है जिंदगी
बहुत कुछ पाने की प्यास में
सपने पूरे करने की आस में
किसी के खोने की आशंका से
उपजते डर के एहसास में

होती रहती सब की तमाम है जिंदगी
कभी सुबह है तो कभी शाम है जिंदगी
उम्मीदों की बाँझ होती माया से
साल दर साल घिसती काया से
पार करो उम्र के पड़ाव कई
तब परिचय हो पाता अपनी ही छाया से
फिर भी तो रच देती धाम कई जिंदगी
कभी सुबह है तो कभी शाम है जिंदगी

पुष्कर दीक्षित
शाहजहांपुर

रात भर ख्वाब में वो सताते रहे

प्यार से नित गले हम लगाते रहे।
गोद में शीश रख कर सुलाते रहे॥
यार वो मम हृदय से निकलते नहीं,
रात भर ख्वाब में वो सताते रहे॥

रात भर ख्वाब में वो सताते रहे।
झूठ की नींव पर घर बनाते रहे॥
देख जिनको दुखी मैं रुवासा हुआ,
आँख हमसे सदा वह चुराते रहे॥

गीत मीठे जिन्हें हम सुनाते रहे।
रात भर ख्वाब में वो सताते रहे॥
दीप बन के जला मैं तुम्हारे लिये,
पीठ पर वार कर क्यों रुलाते रहे॥

रात भर ख्वाब में वह सताते रहे।
चौन दिन रात उन पर लुटाते रहे॥
थाम उँगली चलाया जिन्हें था यहाँ,
शूल पथ में सदा वह बिछाते रहे॥

हार कर जीत जिनको दिलाते रहे।
मान अपलक सदा हम बढ़ाते रहे॥
धूल समझा उन्होनें मुझे राह की,
बात हर पल हवा में उड़ाते रहे॥

डा. आदेश कुमार 'पंकज'
सोनभद्र

हे कागदेव जी ! पधारिए और सद्बुद्धि दीजिए ?

व्यंग्य

प्रभुनाथ शुक्ला, भदोही

हे ! कागदेव आप कलयुग के पितृदेव हैं। हम आपकी श्रेष्ठता को नमन करते हैं। हम समदर्शी सृष्टि का भी अभिनंदन करते हैं, जिसने आपको पितृपक्ष यानी पखवारे भर के लिए श्रेष्ठ माना है। लेकिन आपका सम्मान देख इहलोकवासी पितामहों को ईर्ष्या होती है। कागदेव आप नाराज मत होइएगा। लेकिन धरती पर जीवित उन लाखों पितामहों की पीड़ा स्वर्गवासी पितरों को जरुर पहुंचा देना। कहा जाता है कि आप पितरों के प्रतिरुप हैं, लेकिन आजकल आप भी गायब हो चलें हैं। श्राद्ध की बलि के लिए आपको लोग खोजते फिर रहे हैं, लेकिन आप गायब हैं। इंसान खुद नहीं बता पा रहा कि आपके के गायब होने कि वजह क्या है। आप अगर यूँ ही गायब रहते हैं तो बाजारबाद बेहद खुश हो जाएगा। वह आपका प्रतिरुप बाजार में उतार कर पितृपक्ष में अपना बाजार चमकाएगा। हे ! कागभुसूंडी जी, आप बजारवाद के सिद्धांत को जानिए और पितरों की आत्मशांति के लिए प्रगट होइए।

हे कागदेव जी ! धरती पर घोर कलयुग है। कतिपय लोग अपने जीवित माता-पिता से अधिक अपने पालतू डॉगी को अधिक सम्मान देते हैं। उसे सुबह-शाम खुली हवा में मॉर्निंग वॉक कराते हैं। अपनी कार में घुमाते हैं। उसे चूमते और चाटते हैं। लेकिन माता-पिता को वृद्धा आश्रम में छोड़कर आते हैं। जबकि पितरों के श्राद्ध का दिखावा करते हैं। पितृपक्ष में स्वर्गवासी पितरों की आत्ममाओं का तर्पण अवश्य करते हैं। धरा पर सशरीर मौजूद पितामहों की उपेक्षा और पीड़ा का ख्याल नहीं रखते हैं। आपसे यह कहते हुए मुझे बेहदपीड़ा हो रही है कि आप कौवे के रुह में भी पितृपक्ष में जिंदा इंसानों से अधिक सम्मान पाते हैं। हे श्रेष्ठ चार्तुय ! निवेदन है कि धरती पर हमारे जो सदेह माता-पिता हैं, जो परित्यक्त और उपेक्षित हैं उन्हें भी सम्माननीय बनाइए। अधुना पीढ़ी को कुछ ज्ञान दीजिए। हे काग स्वरुप में अवरित पितरदेव। आप तो पखवारे भर हलुवा-पूड़ी मेवा-मिश्री और खोए से बनी मिठाइयों के साथ भांति-भांति के पकवान छक कर खाते हैं। पूरे पखवारे भोज और सम्मान उड़ाते हैं। आप खुद के तर्पण के लिए खोवे की व्यवस्था कराते हैं। गंगा जल की तिलांजलि से प्यास बुझाते हैं। ब्राहमणों पर धन की वर्षा करवाते हैं। वैदिकमंत्रों के बीच पिंड़दान लेते हैं, लेकिन धतरतीवासी अपने वंशजों का जरा सा ख्याल नहीं करते हैं। वह बेचारे जर्जर शरीर में धरतीलोक में जिंदालाश की तरह पड़े हैं। कोई वृद्धा आश्रम में पड़ा है तो कोई सीलन भरे कमरे में। पितर पखवारे में भी उन्हें कोई घास नहीं डालता। इनकी संख्या दो-चार नहीं लाखों में है। वृद्धा आश्रमों में जीवन गुजारते हैं। संताने देश-विदेश में स्वांतः सुखाय का जाप करती हैं और मां-बाप को बोझ समझती हैं। परलोकवासी होने के बाद झूठे सम्मान में तेरहवीं पर देशी घी का भोज करते हैं। हे कागदेव ! ऐसे प्राणियों को आप कब सद्बुद्धि दोगे।

गजल

मच्छर मकड़ी जालों बाला!
घर है बड़े कमालों बाला!
एक वजीर को देखा प्यादा,
था वह सीधी चालों वाला!
किस्मत की चाबी गुम जिसकी,
मैकेनिक वो तालों बाला!
जी की बात सुनेगा कैसे,
वो जी के जंजालों वाला!
अमन चौन का राग अलापे,
बंदूकों की नालों वाला!
लाजवाब यह मुल्क भी अपना,
मुश्किल बने सवालों बाला।

दिनेश रस्तोगी
शाहजहांपुर

ट्रैफिक

शीला श्रीवास्तव, इंदौर

पत्नी और बच्चों को शॉपिंग मॉल के बाहर उतार कर शर्मा जी गाड़ी पार्क करने के लिए जगह ढूंढने निकल पड़े। करीब एक किलोमीटर का चक्कर उन्होंने लगा लिया, पर कहीं गाड़ी पार्क करने की जगह नहीं मिल रही थी तभी उसकी पत्नी का फोन आया, 'इतना समय लगता है गाड़ी पार्क करने में?' 'अरे गाड़ी पार्क करने की जगह खाली नहीं है। पता नहीं इतनी गाड़ियां कहां से आ जाती है ! मैं आ रहा हूं, कहीं और चलते हैं ,वहीं से शॉपिंग कर लेना।' गुस्से में बोलते हुए शर्मा जी ने फोन काट दिया।

कितना शौक से मिसेज शर्मा यहां शॉपिंग के लिए आई थी अब ट्रैफिक की वजह से उन्हें बैरंग लौटना पड़ रहा था। मनमाफिक मॉल से शॉपिग न कर पाने का मलाल उनके चेहरे से साफझलक रहा था। शर्मा जी को दो दिन पहले की बात याद आ गई, जब उन्होंने अपने पड़ोस में रहने वाले गुप्ता जी का मजाक उड़ाया था, श्क्या गुप्ता जी !पैसा बचाने के लिए आप अपने दोस्त की गाड़ी में जाते हैं। तब गुप्ता जी ने बड़ी शालीनता से जबाब दिया था, 'इससे

एक नहीं तीन फायदे हैं, पहला पेट्रोल बचता है। दूसरा, सड़क पर ट्रैफिक कम होती है और तीसरा पॉलुएशन भी कम होता है। जब तीन- तीन फायदे हैं तो शेयरिंग में क्या बुराई है और हां आपके जानकारी के लिए बता दूं कि एक सप्ताह मैं अपनी गाड़ी ले जाता हूं और एक सप्ताह मेरा दोस्त गाड़ी ले जाता है।' तब भी शर्मा जी हंसते हुए बोले थे, 'मुझे तो ये सब नहीं जमता' और आज उन्हें गुप्ता जी की बात सही लग रही थी।

मानवीय रिश्ता

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

जेबरा क्रासिंग पर घिसी हवाई चप्पल में बेवाई फटे पांव व गंदे वस्त्र पहने बूढ़ा आदमी अपनी धुन में कलम बेच रहा था मूंगफली खाते बच्चा कार में से बूढ़े को देख रहा था। पैकेट में से बीनते-बीनते उसने बूढ़े को इशारा से बुलाया। वह बूढ़ा उसकी ओर आया और बोला 'दस रुपए में पांच पेन छोटे साब... आपको चाहिए'। बच्चे ने उस बूढ़े की बेबसी को शायद भाँप लिया और कार में बैठने का इशारा किया लेकिन, उसे कुछ समझ न आई।

बच्चे को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। फिर उसका ध्यान बच्चे के पहने नए वस्त्र पर गई तो वह बिना बैठे जाने लगा। अचानक बच्चा बूढ़े को जाता देख बोला 'काश! मेरे भी दादा होते तो आपके की तरह बिलकुल होते' वह सोचने लगा। अपने पैबंद लगे वस्त्रों को देखा और बोला 'मेरा भी काश कोई पोता होता। तुम्हारी मासूमियत ने दिल जीत लिया। बूढ़े के कंधे को झकझोरते हुए, गाड़ी में बैठने को कहने लगा। बूढ़ा गाड़ी में बिना सशंकित मन से बैठ गया और चेहरा पर खुशी का भाव था दोनों के बीच मानवीय रिश्ता बन गया जो अटूट रहेगा।

पत्नी प्रशंसा दिवस सेलिब्रेशन

अयोध्या प्रसाद
लखनऊ

एक दिन ज्ञान की खोज में इंटरनेट पर एक दिवस विशेष का ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान का विषय था-पत्नी प्रशंसा दिवस। यह दिवस पतियों को एक अवसर विशेष प्रदान करता है कि वे अपनी पत्नी की प्रशंसा में वैविध्यपूर्ण रूचिकर गतिविधियों, उपहार, सरप्राइज इत्यादि के माध्यम से इस दिन विशेष को सेलिब्रेट कर सकते है।

उल्लेखनीय है कि यह दिवस विशेष सितम्बर माह के तीसरे रविवार को मनाया जाता है, दिनांक चाहे जो भी पड़े। रविवार को शायद इसलिए मनाया जाता है कि पति यह बहाना न बना पाएं कि आज किसी जरूरी मीटिंग में जाना है या बॉस ने किसी प्रोजेक्ट के सिलसिले में बुलाया है या अन्य ऐसा कोई बहाना जो प्रायः घर से बाहर रहने के लिए बनाए जा सकते हैं। महीने के तीसरे रविवार को पड़ने से पति को यह फायदा हो सकता है कि वह अपने घरेलू घाटे के बजट के मद्देनजर कम से कम खर्च में इस दिवस को सेलिब्रेट कर सके। महीने के सेकेंड हाफमें होने के कारण इस पर पत्नी की ओर से टीका टिप्पणी मिलने की उम्मीद कम हो सकती है। ज्ञान प्राप्ति के बाद पत्नी प्रशंसा दिवस पर मैंने मंथन शुरू किया। यह ऐसा विषय था जो कई बार अनजाने में कई संदेहों और आशंकाओं को भी जन्म दे सकता है। पत्नी को पति की अचानक प्रशंसा मिलते ही वह सतर्क हो जाती है, यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। पति का पत्नी की प्रशंसा करना या किसी हास्य प्रसंग के न होने पर भी यदा कदा मुस्कराना कई बार संदेह पैदा कर देता है। ऐसी स्थिति में कारण का पता लगाना पत्नी की सहज प्रवृत्ति है। देखने में आता है कि पति के उम्र के पड़ावों से भी इसका गहरा सम्बन्ध है। 45 वर्ष की आयु तक के पतियों के लिए अकारण प्रसन्नता का कारण खतरे के निशान से ऊपर रेखांकित होता है, ऐसा अनुभवी लोग कहते हैं और 55 वर्ष से ऊपर की आयु वर्ग के लिए प्रसन्नता का कारण संदेह-आशंकाओं से ऊपर उठकर घरेलू जिम्मेदारियों के निर्वहन पर सफलता मिलने का द्योतक हो सकता है, ऐसा वरिष्ठ नागरिक श्रेणी के लोग कहते हैं।

वैसे प्रायः देखा गया है कि पत्नी इस प्रकार के दिन विशेष का इंतजार नहीं करती। वह पति से उपहार प्राप्ति के लिए उन्हें समय समय पर प्रेरित करती

रहती है। जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, तीज, करवा चौथ, अक्षय तृतीया, धनतेरस जैसे तमाम ऐसे मनलुभावन अवसर साल भर में उपलब्ध होते रहते हैं, जब वह अपने प्रस्ताव प्रस्तुत करके मनमाफिक उपहार प्राप्त करती रहती हैं। प्रायः पतिगण ऐसे अवसरों पर प्रश्नचिन्ह लगाने या जवाब तलब न करने में ही अपनी भलाई समझते हैं।

घर के बाहर पति कितना भी बड़ा पद धारण करने वाला तुर्रमखां हो, वह घर में प्रायः कम बोलने वाला, संतुलित विचारवान, सहनशील, समझदार, समस्या समाधानक, पत्नी के निर्देशों का समयानुसार अनुपालन सुनिश्चित करने वाले व्यक्तित्व की भूमिका में ही रोल प्ले करता दिखाई पड़ता है। उल्लेखनीय है कि हीरे-स्वर्ण आभूषणों के प्रति विरक्ति का पति का थोथा ज्ञान पत्नी को बिल्कुल भी प्रभावित नहीं करता। ऐसे प्रकरण में पत्नी की इच्छाशक्ति ज्यादा प्रभावी होती है और वह पति के थोथे ज्ञान को सिरे से खारिज कर देती है।

पत्नी प्रशंसा दिवस को सेलिब्रेट करने के लिए मैने अपने अभिलाषी विचार पत्नी से साझा किए और उसे उन सब विकल्पों के बारे में बताया जिसका ज्ञान मैने प्राप्त किया था। पत्नी ने पहले तो मेरी इतनी खुशी का कारण जानना चाहा। मैंने उसे बताया कि यह प्राप्त ज्ञान का परिणाम है। मेरी प्रसन्नता में किसी अन्य कारक का योगदान नहीं है। पत्नी काफी देर तक मेरे चेहरे पर आते जाते मनोभावों को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से पढ़ती रही फिर उसने बड़े संतुलित भाव व्यक्त करते हुए कहा- इस तरह के अभिनव प्रयोग का कोई औचित्य नहीं जान पड़ता। जब गोवा जैसी जगहें घूमने घुमाने का समय था तो कभी फुरसत नहीं मिलती थी। दफ्तर के ढेरों काम, कभी बैठकें, कभी दौरे। मैंने कहा कि प्राप्त ज्ञान में उम्र का कोई जिक्र नहीं है कि फलां से ज्यादा आयु के पति इस दिवस को सेलिब्रेट नहीं कर सकते। किसी भी आयु का पति इसे सेलिब्रेट कर सकता है। पत्नी ने दार्शनिक मुद्रा में मेरे चेहरे की बेचारगी को पढ़ा।

कहा इस तरह के दिवस मनाना हम जैसों का काम नहीं है। बड़े मन से बनाए हुए खाने की पति तारीफ कर दे, तीज त्योहारों पर अपने मन से वस्त्र-आभूषण दिला दे। पत्नी के थका होने पर या छुट्टी में किचेन में जाकर पत्नी का हाथ बंटा दे, अस्वस्थ होने पर हाल चाल पूछ ले और समुचित उपचार मिल जाए, हमारे लिए वही सबसे बड़ी प्रशंसा है और अब तो ये सब हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। आपको पत्नी प्रशंसा दिवस को अलग से सेलिब्रेट करने की क्या जरूरत है। पत्नी के भाव सुनकर मन द्रवित हो गया और प्राप्त किया हुआ सारा ज्ञान जस का तस धरा का धरा ही रह गया।

हम आप और रसोई

रेसिपी तिल मेवा गुलाब चिक्की....

जैसा की मौसम बदल रहा है सर्दियां आने वाली है। इस स्वादिष्ट और आसान सी चिक्की को जरूर बनाए।

आज हम आपके लिए तिल मेवा गुलाब चिक्की की रेसिपी लाए हैं। तिल मेवा गुलाब चिक्की तिल से बनाई जाती है। इसलिए इसे तिल की चिक्की, तिल पट्टी और गुड की चिक्की भी कहा जाता है। तिल मेवा गुलाब चिक्की खाने में बहुत स्वादिष्ट होती है और हेल्थ के लिए भी फायदेमंद होती हैं। तिल मेवा गुलाब चिक्की बनाने में भी आसान है। तो लीजिए तिल मेवा गुलाब चिक्की बनाने की विधि नोट कीजिए और इसे आज ही ट्राई करिए। हमें यकीन है कि तिल मेवा गुलाब चिक्की रेसिपी आपको पसंद आएगी।

छवि गुप्ता
प्रयागराज

चिक्की एक पारंपरिक भारतीय मिठाई है जो गुड़ से बनाई जाती है और यह एकमात्र मेवा है जिसे आमतौर पर हम जानते हैं – मूंगफली! यह कुछ मीठे और नमकीन का एक शानदार मिश्रण है जो गुड़ के साथ एक पौष्टिक स्वाद देता है। अब, बाजार में विभिन्न प्रकार की चिक्की उपलब्ध हैं।

विधि

एक कड़ाई मे तिल डालकर सुखा भून ले धीमी आंच मे तिल चटकने तक तिल भूनने के बाद अलग रखे। उसी कड़ाई मे थोड़ा सा घी डाले और गुड़ डाले और बराबर चलाते रहे धीमी आँच पर गुड़ जैसे ही अच्छे से उबाल आने लगे उसमे भुना हुआ तिल, मेवा, इलाइची पाउडर और गुलाब की सुखी पंखुड़ी डाले और एकसार होने तक उसको मिलाये अच्छे से मिल जाने के बाद बेलन और पटरे मे घी लगाएँ और उसी मे पलट दे और गरम गरम ही पतला बेले तुरंत चाकू से कट्टिंग का निशां लगाएँ जिस आकार मे आपको काटना है तिल मेवा रोज चिक्की तैयार है परोसने के लिए।

सामग्री.....

एक कप भुना हुआ मेवा (बदाम, काजू)
एक कप सफेद तिल
एक कप गुड
तीन बड़े चम्मच कतरा हुआ भुना पिस्ता
एक छोटा चम्मच इलाईची पाऊडर
तीन बड़े चम्मच घी
गुलाब की सुखी पंखुड़ी

नोट–

1. गुड़ धीमी आँच पर ही पाकाएं और बराबर चलते रहे
2. भुना हुआ मेवा ही प्रयोग मे लाएं। गर्म मे ही बेले और काटे
3. घी जरूर लगाएँ
4. पाउडर ठंडा हो जाए तो जार में भरे।

पितृपक्ष

नीना सिन्हा
बिहार

'क्या दादी! जब देखो पुरातन जमाने की रीति-रिवाजों में व्यस्त रहती हैं! मम्मी को भी उलझा रखा है। 'क्यों इतना चिढ़ा हुआ है? पितृ पक्ष चल रहा है, जानता है न?' दादी ने मुस्कुराते हुए अनसुना किया। 'आजकल आपको और मम्मी को गंदी-शंदी चीजें खाने वाले काले कौवे बड़े पसंद आ रहे हैं! जो कहीं भी पड़ा हुआ कुछ भी खाते हैं, उनको खीर-पूरी खिलाया जा रहा है! उनके भाव बढ़ गए हैं!', बोर्डिंग स्कूल से घर आया हुआ मयंक झल्लाया हुआ था, 'श्राद्ध पर्व मैं भी समझता हूँ। पूर्वजों को स्मरण करना अच्छी बात है, पर कौवों का पीछा क्यों कर रहे हैं आप लोग? ऐसी क्या खास बात पैदा हो गई है उनमें?' 'कहा जाता है, 'इंद्र-पुत्र जयंत ने कौवे का रूप धारण कर माता सीता के पैर में चोंच मारी थी। तब भगवान श्रीराम ने तिनके का बाण चलाकर जयंत की आँख फोड़ दी थी। उसके द्वारा माफी माँगने पर श्रीराम ने उसे वरदान दिया कि पितृ पक्ष में उनको अर्पित किया गया भोजन पितरों को मिलेगा।' तभी से इनको भोजन कराने की परंपरा चली आ रही है। इनको यमराज का संदेशवाहक भी कहा जाता है। वे हमारा संदेश हमारे पितरों तक पहुँचा देते हैं। यह है पौराणिक कथा। इसके पीछे अगर कोई वैज्ञानिक कारण है तो मम्मी से पूछ! विज्ञान की विद्यार्थी थी। अपने प्रश्न लेकर उसी की शरण में जा।'

'अब तुम बताओ, मम्मी!' 'प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि अथाह ज्ञान का भंडार थे। मध्य-युग में हुए हमलों ने हमारे ज्ञान की थाती का बड़ा नुकसान किया है। नालंदा विश्वविद्यालय को जला दिया जाना एक उदाहरण है, जिसके साथ जाने कितने ग्रंथ जल गए होंगे। ऐसे कितने ही उदाहरण मिलेंगे, जिनमें हमारी संस्कृति और साहित्य को बार-बार कुचला गया। दरअसल ऋषि-मुनि अपने ज्ञान को धर्म के साथ इसलिये जोड़ते थे ताकि जनसाधारण सूत्र स्मरण कर उनका पालन करे, क्योंकि गूढ़ बातें समझना सबके बस की बात नहीं।' 'पर मम्मी! इस सब के बीच में कौवे कहाँ आते हैं?' 'बताती हूँ, सब्र रख! सावन-भादों (अगस्त-सितंबर) में कौवी के अंडों से बच्चे निकलते हैं। इन्हीं महीनों में श्राद्धपक्ष पड़ता है। कौवों को आसानी से पौष्टिक आहार मिल सके, इसीलिए इसे श्राद्ध पक्ष से जोड़ दिया गया। इस मान्यता की पृष्ठभूमि में बरगद और पीपल जैसे देव वृक्षों की सुरक्षा जुड़ी है, जो प्राणियों को प्राणवायु के अलावा रोग-मुक्त शरीर के लिए औषधियाँ भी देते हैं। कौवे इन वृक्षों के फल खाते हैं तो बीज इनके पेट में ही अंकुरित हो जाते हैं।

जब यह यत्र-तत्र बीट करते हैं तो वर्षा ऋतु के कारण पीपल और बरगद तुरंत उग आते हैं। इस प्रकार वे बीजों के चतुर्दिक संवाहक का काम करते हैं। यहाँ तक कि पुराने मकानों की दीवारों में भी पीपल और बरगद उग जाते हैं।' 'हम्म्म! तुम्हारी बातों में मुझे तर्क नजर आ रहा है मम्मा! अब मैं उनसे नफरत नहीं करूँगा, खीर पूरी खिलाऊँगा। एक प्रश्न और, पितृ पक्ष में ही क्यों, वर्षभर क्यों नही?' 'हे भगवान! तेरी प्रश्नोत्तरी कभी खत्म नहीं होगी। मेरी जान छोड़, पापा से पूछ!'

बढ़ते कदम

अब जमाना गुजर गया है,
प्रताड़ित करने का समय काल नहीं रहा है,
आसमानी हौसला उफान पर है,
आधी आबादी सिना तान कर खड़ा है,
यह अमृत काल का उत्कर्ष है,
महिला सशक्तिकरण पर गम्भीरता से विचार करना,
आज वैश्विक स्तर पर मानों एक संघर्ष है,
यह जागरूकता की निशानी है,
नारी शक्ति को सम्बल प्रदान करने की नई कहानी है,
यह बढ़ते हुए कदम,
नारी शक्ति को नया इतिहास बनाने में मदद करेंगी,
बुलंदियों पर पहुंचने में,
सफल होकर रहेंगी।
यह नवीन जोश और उत्साह से,
मनाया जाने वाला त्योहार है,
आधी आबादी को मिला एक उत्कृष्ट उपहार है।
हमें सम्हलकर रहने की जरूरत है,
नारी शक्ति को सम्बल प्रदान करने की,
बढ़ रहा अहमियत है।
यह अहम् भूमिका निभाएंगी,
सफलता की राह पर चलते जाएंगी।
महकती फिजा में यह रंग भर देंगी,
आसमानी हौसला अफजाई करते हुए आगे बढ़ेगी।
यह आज की दुनिया में,
सबसे प्रखर पहचान बनाने वाली ताकत बनेंगी,
दुनिया भर में मजबूती से आगे बढ़ेगी।

अशोक शर्मा
पटना

श्राद्ध-परंपरा या विश्वास

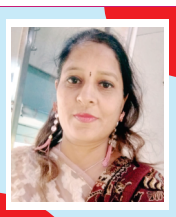

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

हिन्दू संस्कृति में कर्म धर्म के रूप में मनाया जाने वाला ऐसा कार्य जो यह आत्म संतुष्टि प्रदान करता है कि इस कार्य परंपरा से हम अपने पूर्वज के ऋण से मुक्ति प्राप्त कर रहे हैं। श्राद्ध पक्ष का हिन्दू संस्कृति में अपना ही अलग महत्व है और इस धर्म कर्म को मनाने के अपने रीति रिवाज प्रचलित है। श्राद्ध हिन्दू एवं अन्य भारतीय धर्मों में किया जाने वाला वह कर्म है जिसके पीछे मान्यता है कि पितरों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता अभिव्यक्त करना तथा उन्हें याद करने के निमित्त किया जाने वाला कर्म है। जिन पूर्वजों के कारण हम आज अस्तित्व में हैं, जिनसे गुण व कौशल, आदि हमें विरासत में मिलें हैं, उनका हम पर न चुकाये जा सकने वाला ऋण हैं। वे हमारे पूर्वज पूजनीय हैं। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धापूर्वक किया हुआ वह संस्कार ,जिससे पितृ संतुष्टि प्राप्त करते हैं। पितृ पक्ष आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होता है,जो अमावस्या तिथि तक रहता है। मान्यता है कि पितृ पक्ष में श्राद्ध और तर्पण करने से पितर प्रसन्न होते हैं और परिजनों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

हिन्दू धर्म में माता पिता दोनों का श्राद्ध उनके देहावसान के दिन हिन्दू पंचांग के अनुसार किया जाता है। इसके अलावा प्रतिवर्ष श्राद्ध पक्ष महालय या पितृपक्ष में सभी पितरों के लिए श्राद्ध कार्य किया जाता है। पितर का अर्थ माता पिता, दादा दादी, नाना नानी, और उनके पहले उत्पन्न सभी सम्बंधी जो मातृ पक्ष और पितृपक्ष दोनों से संबंधित होते हैं

उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए किया जाता है। यह एक धार्मिक मान्यता के भाव से किया जाने वाला कर्म है जिसे प्रत्येक प्राणी स्वेक्षा या भय से सम्पन्न करता आ रहा है। भय इसलिए क्योंकि यदि ऐसा नहीं किया तो मृत्य आत्मा असंतुष्ट हो जाएगी और इस अवस्था में पता नहीं कौन सा प्रकोप उस परिवार पर आ जाए। माता पिता का ऋण तो स्वयं में इतना प्रबल है जिसे एक जन्म लेकर तो कभी चुकाया ही नहीं जा सकता इस दृष्टिकोण से विचार करुं तो लगता है कि साल के यह 15 दिवस भी उस ऋण की पूर्ति नहीं कर सकते। आज के बदलते परिवेश को देख कर अहसास होता है कि एक तरफ तो हम किसी की मृत्यु के पश्चात इतने मनोयोग से उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए इतना पुण्य धर्म कर्म कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे होते हैं परन्तु उनके जीते जी उनकी आत्मा संतुष्टी के लिए हम क्या कर रहे हैं क्या हिन्दू संस्कृति में ऐसी कोई परंपरा या भय व्याप्त नहीं जो प्राणी के जीवित अवस्था में ही उनकी आत्मा संतुष्टी के लिए वो सब करने को बाध्य कर सके कि प्राणी की मृत्यु के पश्चात यह पश्चाताप शेष न रहे कि उस व्यक्ति की आत्म संतुष्टि के लिए कोई कार्य शेष रह गया है।यह ग्लानि यह भाव मृत्यु पश्चात ही इतना प्रबल क्यों हो जाता है। अगर हम जीवित प्राणी को ही पूर्ण संतुष्ट कर सके तो शायद फिर यह परम्परा और सुखद हो जाएगी क्योंकि फिर श्राद्ध पक्ष में पितरों को याद किया जाने वाला कर्म भय से नहीं उनके प्रति कृतज्ञ भाव व्यक्त करने के उद्देश्य से किया जाने लगेगा। वैसे भी आत्मा तो एक शरीर छोड़कर अन्य शरीर में प्रवेश कर अपने नवीनतम जीवन के उद्देश्य के लिए चलायमान हो जाती है यह तो मानव सम्बन्ध चक्र है जिसमें हम मोहवश अपने सम्बंधी के रूप में उनकी मृत्यु पश्चात भी उनके पूर्व स्वरूप को हर पल याद कर रहे हैं और कभी कृतज्ञतावश तो कभी भयवश उनकी आत्मा तृप्ति के रूप में इस धर्म कर्म को किए जा रहे हैं।

चुटकी भर नमक का जोखिम

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

आधुनिक जीवनशैली में स्ट्रेस बढ़ता जा रहा है। छोटी-छोटी बातें स्ट्रेस दे जाती हैं और हमें पता भी नहीं चलता। इस स्ट्रेस का खामियाजा सीधे दिल को झेलना पड़ता है। यही कारण है की दिल के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। किसी के धड़कन की गति कम तो किसी की ज्यादा। देखें तो दिल के रोगी हर जगह मिलेंगे। यह आम समस्या बन चुकी है। घर – घर की कहानी बन चुकी हैं।

स्ट्रेस के साथ दिल की बीमारी लगातार बढ़ने का एक बड़ा कारण खाने-पीने में लापरवाही बरतने की बढ़ती प्रवृत्ति है। आजकल देखने मे मिलता है कि कई लोगों का नाश्ता और खाना में कोई अंतर ही नहीं होता। वह जब भी खाते कंठ भर खाते। वो भी समय से नहीं खाते। अपने खाने में नमक मशाले का ज्यादा उपयोग कर हम बीमारी को आमंत्रित करते हैं। 'अति सर्वत्र वर्जयेत' अति का उच्चारण करने में ही जिह्वा दंत दोनों को मेल कराना पड़ता हैं। यह दोनों तो अकेले काफी है। तो अति से परहेज तो आवश्यक हैं। अन्य देशों में जहां पांच ग्राम नमक खाए जाते हैं वही हमारे देश में औसतन हर एक व्यक्ति 8.3 तीन ग्राम नमक खाते हैं। यहीं से हर बीमारी का शुभारंभ हो जाता हैं। एक चुटकी नमक की कीमत कितनी ज्यादा होती हैं वह तो निम्न उच्चताप वाले लोग आपको बखूबी बता सकते हैं। एक चुटकी नमक उनके अंदर जाते ही कुछ ही क्षण में एक नया ऊर्जा प्रदान करता हैं। वह अच्छा महसूस करने लगते हैं। यहीं एक चुटकी ज्यादा खाने वाले व्यक्ति का उच्चताप बढने पर वह कैसे चित्त हो जाते वो उन्हें भी नहीं पता। हम सब एक चुटकी नमक ज्यादा खाने का रिश्क उठा तो लेते हैं लेकिन हम बीमारी के अधीन हो जाते हैं। हमारे देश में 97 प्रतिशत लोग सही मात्रा में नमक नहीं खा रहे। वही दुनिया में ज्यादा नमक खाने से 18.9० लाख लोगों की एक वर्ष में मौत हो रही हैं। ज्यादा नमक खाना से हम कई बीमारी के शिकार होते चले जाते हैं। जो लोग 9.2 ग्राम नमक खा रहे वह मोटापे से ग्रस्त हैं। नौकरी पेशे वाले लोग 8.6 ग्राम नमक खा रहे हैं। भागमभाग में ढाबा होटलों में खाना खाना लोग ज्यादा पसंद कर रहे हैं। जो नुकसानदेह ही हैं। यहां नमक मशालें का प्रयोग ज्यादा मात्रा में किया जाता हैं। वही तंबाकू का सेवन करने वाले लोग 8.3 ग्राम नमक ले रहे हैं। जो चिंताजनक हैं। हमे अपने सेहत का ख्याल रखना बेहद जरूरी है।

पितृपक्ष और जोगे-भोगे की प्रसिद्ध पौराणिक कथा

रेखा शाह
बलिया

इस साल पितृ पक्ष की शुरुआत 29 सितंबर 223 दिन शुक्रवार से होने वाला है पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पितृ पक्ष पन्द्रह दिनों का वह समय होता है जब हम अपने मृत प्रिय जनों के लिए कुछ कर सकते हैं। अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सकते हैं, इन दिनों में अपने मृत प्रिय जनों को आदर से याद करते हैं और उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं। उनका तर्पण पिंडदान और श्राद्ध करते हैं जिससे कि वह प्रसन्न होकर हमें सुख संतति और संपत्ति खुशहाली का आशीर्वाद देते हैं। यह एक ऐसा पर्व है जिसमें हम अपने परिवार के भूतकाल अर्थात पितरो का वर्तमान से परिचय भी करवाते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है की किसी की मृत्यु होने के पश्चात जन्म लेने वाले उस परिवार के बच्चे अपने पूर्वजों से मिले नहीं रहते हैं। सिर्फतस्वीर के द्वारा देखे रहते हैं लेकिन पितृपक्ष में अपने माता-पिता और अन्य परिजनों द्वारा अपने पूर्वजों को सम्मान दिया जाना देखते हैं और पितृपक्ष में पितरों के लिए किए गए अनुष्ठानों के क्रियाकलापों में भाग लेने से अपने पूर्वजों के संग एक आत्मिक जुड़ाव उनका हो जाता है। और स्वत ही उनके मन में अपने प्रिय पूर्वजों के प्रति सम्मान का भाव आ जाता है। इस लिए यहां पर भूतकाल का वर्तमान से परिचय शब्द प्रयोग किया गया।

पितृ पक्ष में पितरों को ग्रास देना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। देने का निमित्त कौवे को बनाया जाता है। और उसी के माध्यम से अपने पितरों को भोजन पहुंचाया जाता है। इसीलिए पितृपक्ष में कौवे का विशेष महत्व धर्म ग्रंथो में बताया गया है। कौवा यम का भी प्रतीक होता है। इस दौरान मान्यता है कि हमारे पूर्वज कौवे के रूप में हमारे आसपास हमसे मिलने के लिए आते हैं। और उनका आसपास होना बहुत ही शुभ संकेत माना जाता है। कौवे द्वारा भोजन ग्रहण कर लिए जाने से माना जाता है कि पितर हमसे प्रसन्न है जिसका अर्थ है सुख सौभाग्य समृद्धि में वृद्धि होना है। पितृपक्ष में पूरे 15 दिनों तक कौवे को भोजन करवाने के विधान है। कौवे के अलावा पितृपक्ष में गाय ,कुत्ता और चींटी इनको भी भोजन कराया जाता है इनको भी भोजन करवाना पितरों को तृप्त करता है पुण्य दायी माना जाता हैं।

पितृपक्ष के बारे में एक पौराणिक कथा बहुत ही मशहूर है कि जोगे और भोगे दो भाई थे ,दोनों अलग रहते थे जोगे धनी था, भोगे निर्धन था , दोनों में किंतु फिर भी बड़ा प्रेम था, जोगे की पत्नी बहुत

की घमंडी थी, किंतु भोगे की पत्नी सरल हृदय महिला थीं। जोगे की पत्नी ने पितृपक्ष आने पर पितरों का श्राद्ध करने के लिए कहा तो जोगे इन कार्यो को व्यर्थ बताकर टालने की चेष्टा करने लगा। किंतु उसकी पत्नी ने उसे समझाया कि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो लोग हमारे बारे में अनेक प्रकार की बातें करेंगे। दरअसल जोगे की पत्नी अपने मायके वालों को दावत पर बुलाकर अपनी शान दिखाना चाहती थी। अत: वह बोली- 'आपको लगता है मुझे बहुत सारा काम करना पड़ेगा ,इसलिए आप ऐसा कह रहे हैं किंतु मैं भोगे की पत्नी को बुला लूंगी , दोनों मिलकर सारा काम कर लेंगे'। फिर उसने जोगे को अपने पीहर न्यौता देने के लिए भेज दिया। दूसरे दिन उसके बुलाने पर भोगे की पत्नी सुबह सवेरे आकर काम में जुट गई, उसने अनेक प्रकार के पकवान छप्पन भोग बना दिए। और सारे काम निपटा कर अपने घर आ गई आखिर वह भी अपने प्रिय पितरों का श्राद्ध, तर्पण करना चाहती थी। इस अवसर पर जोगे की पत्नी ने उसे ना खाने पीने के लिए रोका ना वह रुकी। शीघ्र ही दोपहर हो गई पितर भूमि पर उतरे तो , पितर सबसे पहले जोगे के घर पर गए ,वहां पर क्या देखते हैं कि जोगे के ससुराल वाले वहां भोजन पर जुटे हुए हैं। निराश होकर वह भोगे के यहां गए वहां कुछ भी नहीं था, मात्र पितरों के नाम पर अगियारी दे दी गई थी ,पितरों ने उसकी राख चाटी और भूखे ही नदी के तट पर जा पहुंचे, वहां पर सभी पितर इकट्ठे थे और सभी अपने-अपने श्राद्ध की बड़ाई कर रहे थे। जोगे और भोगे के पितर सोचने लगे अगर भोगे समर्थ होता तो उन्हें भूखे नहीं रहना पड़ता। उन्हें भोगे की दशा देखकर बहुत ही दया आ रही थी। तब वह नाच नाच कर गाने लगे भोगे के धन हो जाए भोगे के घर धन हो जाए। उन्होंने भोगे को सुख समृद्धि से भर दिया इस प्रकार भोगे भी धनी हो गया लेकिन वह धनी होकर घमंडी नहीं हुआ, अगले साल पितृ पक्ष में उसकी पत्नी ने छप्पन प्रकार के व्यंजन बनाए ब्राह्मणों से श्राद्ध कराया ,भोजन कराया, दक्षिणा दी, जेठ जेठानी को सोने चांदी के बर्तन में भोजन कराया, इससे पितर बड़े ही प्रसन्न हो गए और तृप्त हुए। जोगे और भोगे की कथा का सार यही है, धन-संपत्ति होने पर भी हमें अपने पूर्वजों के त्याग, संस्कार, सम्मान को नहीं भूलना चाहिए। अपने नाते बंधुओ से मिल मिला कर रहना चाहिए। गांवों में अब भी जब पितृपक्ष के भोज का आयोजन होता है तो जब तक अपने सभी रिश्तेदार नहीं भोजन पर जीमते हैं तब तक उसे पूर्ण नहीं माना जाता है। हमारे ऋषि मुनि और अनुभवी पूर्वजों ने बहुत सोच समझकर ही धर्म, समाज और प्रकृति का समन्वय करके सारे रीति- रिवाज और पर्व-त्यौहार बनाए थे जो सभी लोकहित में थे।

कल और आज

खूबसूरत थी कल भी
और खूबसूरत आज भी
कल खुद की नजरों से देखती थी
आज दुनिया उसे देखती है

वो अल्हड़ लड़की अब एक स्त्री है
बेबाकी तब्दील हो गई गंभीरता में
चोटी की जगह जुड़े ने ले ली
जिम्मेदारी को कसकर पकड़ रखा है
वही बेपरवाह लड़की....

आज रास्ते तलाशती ही नही
नया बनाती भी है
ताकि कोई नादान सी लड़की
कदम बढाए तो बेफिक्र हो कर...

हँसती हुई स्त्री को पसंद करना
जरा कठिन जान पड़ता है
नापती है नजरें वलयाकार होकर
कहीं कोई दाग तो नहीं..

वो तराश रही है हर रोज
अपनी कमियों से लड़ती है
स्वयं चुना है उसने इस युद्ध को
तो आजीवन चुनौती तय है

सपना चन्द्रा
भागलपुर बिहार

गजल

हकपरस्ती के लिए कुछ तो मैं कर जाऊँगा,
मुश्किलें लाख सही यूँ तो न मर जाऊँगा।

मौत की शर्त पे जिंदा है यहाँ हर कोई,
तयशुदा है तो मैं क्यों मौत से डर जाऊँगा।

तजरबे हाथ लगे खुद की तबाही करके,
अब हैं किस काम के मेरे जो सँवर जाऊँगा।

एक जज्बा ही तो था पार किया वो दरिया,
नाव पलटी तो लगा कैसे उधर जाऊँगा।

अब तो मैं थक ही चुका सुनके हूँ ताने सबके,
लग रहा है कि किसी दिन मैं बिखर जाऊँगा।

बात आयी है अना पर तो हटूँ क्यों पीछे,
खुद की नजरों में गिरूँगा तो किधर जाऊँगा।

'ज्ञान' बैठी है अभी माँ भी तो दरवाजे पर,
डाँट पड़नी ही है गर देर से घर जाऊँगा।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

इण्डिया के सितारे

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

वे वैज्ञानिक थे और उनकी पत्नी थीं कवयित्री। हालाँकि वे खाते-पीते खानदानी थे, लेकिन दुर्भाग्य से भारत में पैदा हुए थे, जबकि उनके चचेरे और ममेरे भाई-बहन वाशिंगटन या लन्दन में। परास्नातक की पढ़ाई वे जैसे-तैसे पूरी कर चुके थे और अब 'भारत छोड़ो आन्दोलन में तहेदिल से लगे थे। इस आन्दोलन के कारणों की कमी न थीकृ यहाँ प्रतिभा का सम्मान नहीं होताय अच्छा वेतन नहीं मिलताय जहाँ देखो, भाई-भतीजावाद है भ्रष्टाचार हैय मनमाने नौकरशाह और मूर्ख राजनीतिज्ञ हैं!... एकदम दमघोंटू वातावरण। भला बताइए, इण्डिया कोई रहने लायक देश है? चाचा, मामा, ताऊ आदि की कृपा से उन्हें लन्दन में सेटेल होने में शीघ्र-ही सफलता मिली। परन्तु दुर्भाग्य की मनमानी देखिए कि तब तक उनका विवाह हो चुका था। विवाह क्या था, गले का ढोल थाकृ बजाने की मजबूरी थी। वासना के सीवर को प्रेम के ढक्कन से ढकना जरूरी हो गया था....

आज, आठ-दस वर्षों के बाद वे भारत, यानी अपने प्यारे देश, लौटे थे। पुराने मित्रों-रिश्तेदारों से मिलने-जुलने में एक सप्ताह बीत गया। उनके पुराने साथी-बाराती यहाँ रहकर कैसे आगे बढ़े थेकृ यह उनके लिए शोध का विषय था। एक विधान परिषद् का सदस्य था, तो दूसरा कुलपति हो गया था। तीसरा जिला जज था और हाई कोर्ट के जज बनने की जोड़-तोड़ में था। चौथा नामी डॉक्टर था, तो पाँचवा व्यापार मण्डल का अध्यक्ष... उनकी धर्मपत्नी की सहेलियाँ भी बड़े घरों-वाली हो चुकी थींकृ एक मुख्यमन्त्री के निजी सचिव की पत्नी थी, तो दूसरी कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल थी। तीसरी दूरदर्शन में समाचार वाचिका थी, तो चौथी फैशन डिजाइनर।

दोनों थे। समारोह की अध्यक्षता का भार एक रिटायर्ड आई.ए.एस.अधिकारी को सौंपा गया था, जो प्रवासी भारतीय के मोहल्ले की शान कहे जाते थे। 'मुख्य अतिथि' का दायित्व उनके ही अनुज, जो बुद्धिजीवी, किन्तु वरिष्ठ पी.सी.एस. अधिकारी थे और अपने बौद्धिक अहम् के कारण प्रमोटेड आई.ए.एस. होते-होते रह गये थे। मंच पर पाँच ही लोगों के बैठने की जगह थी, जिस पर क्रमश: कवयित्री, उनके पति महोदय, अध्यक्ष महोदय, मुख्य अतिथि और संचालक विराजमान हो गये थे। लेकिन तभी एक पूर्व अधिकारी भी कार्यक्रम में पधारे थे, जिन्होंने ऐन उस वक्त नौकरी को लात मारी, जब वे नौकरी से डिसमिस किये जाने वाले थे। सुना जाता है कि अपना इस्तीफा मंजूर करवाने के लिए उन्होंने बाजार से एक सुन्दरी लाकर डिसिप्लिनरी अथॉरिटी के पहलू में यह कहकर पहुँचा दी थी कि वह उसकी पत्नी है! लेकिन डंके की मार के साथ जो सच निकला, वह यह है कि साहब ने इसलिए नौकरी छोड़ी, क्योंकि वे मूलत: कवि थे और कवि को परतन्त्रता कैसे रास आती! बहरहाल, अब वे सफल व्यापारी थे और वक्त निकाल कर कविता लिखते थे। उनकी कविताओं के बारे में भी यह प्रचलित था कि वे इतनी उच्च कोटि की हैं कि वे आम पाठकों या श्रोताओं के बस की नहीं हैं...। संयोग से वे प्रवासी भारतीय के सहपाठियों में से थे, अत: संचालक को मंच पर से उठाकर उन्हें 'विशिष्ट अतिथि' के नवसृजित आसन पर बैठाया गया।

कार्यक्रम संचालक के लिए चूँकि मंच पर स्थान नहीं था, अत: उसके लिए मंच के पास एक अलग से एक आसन की व्यवस्था की गयी थी, जैसे उत्साह में कोई कमी न थी। मंच पर से उठाये जाने के वाबजूद वह अपने सञ्चालन-कौशल के प्रदर्शन को आतुर था। कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सभी स्थानीय कवि-गवैये अपनी-अपनी रचना ऐसे प्रस्तुत कर रहे थे, जैसे उनके लिए यह परीक्षा की घड़ी हो। अगर पास हो गये, तो काव्यपाठ के लिए सीधे लन्दन बुला लिये जायेंगे। कुछ कवियों ने वाकई अच्छा पढ़ा। कवयित्रियाँ तो हमेशा ही जमती है, यहाँ

व्यंग्य

भी जमीं, क्योंकि वे क्या पढ़ रही हैं, श्रोताओं से इससे कुछ सरोकार नहीं होता। वे कैसे पढ़ रही है और कैसी दिख रही हैं, यही उनकी सफलता का पैमाना है! संचालक ने कार्यक्रम जमाने के लिए अपने, अपने वरिष्ठों सहित मीर और गालिब के अशआर के खूब छींटे मारे और बात-बेबात तालियाँ भी बजायीं-बजवायीं, लेकिन वह रंग नहीं जमा, जिसकी कल्पना आयोजकों ने की थी।

कविता-पाठ का कार्यक्रम आखिर मंच तक पहुँचा। प्रवासी कवयित्री ने मंच से श्रीगणेश किया। उन्होंने कुछ प्रकृति के सौन्दर्य को समेटते कुछ छन्द पढ़े। आवाज सुरीली थी, हाव-भाव भी कवयित्रियों वाले। जल्द ही जम गयीं। लेकिन जितनी जल्दी फिर विशिष्ट अतिथि ने रंग जमाने की कोशिश की, पर असफल रहा। शायद मंच का श्रीगणेश ही गड़बड़ा गया था! मुख्य अतिथि ने भी मोर्चा सँभालने की खूब कोशिश की, लेकिन बात न बनी। श्रोताओं ने उनकी तथाकथित प्रगतिशील गद्य कविता को गले न लगा सके। माननीय अध्यक्ष कुछ कारनामा दिखाते, उससे पहले प्रवासी महोदय को 'दो शब्द' कहने थे।

काव्य-रचनाओं के रस अथवा उनकी नीरसता से स्वयं को पूरी तरह बचाते हुए प्रवासी भारतीय ने अपने भाषण में बताया कि वे अभी भी अपने देश से उतना ही प्यार करते हैं, जितना कि पहले, जब वे यहाँ रहते थे। बल्कि कोई माने या न माने, सच तो यह है कि अब वे पहले से भी अधिक प्यार करते हैं। उन्होंने घोषणात्मक लहजे में सूचना दी कि उनका शरीर भले ही भारत में नहीं रहता हो, लेकिन उनकी आत्मा यहीं वास करती है, क्योंकि, 'भारतभूमि स्वर्गादपि गरीयसी!'.... उन्होंने इसके समर्थन में अपनी अन्तिम इच्छा भी प्रकट की कि उनका पञ्चतत्त्व भारत में ही विलीन हो। उनकी इस बात पर सभी ने जोरदार तालियाँ बजायीं। उन्होंने सगर्व सूचित किया कि उनके बच्चे भी भारत से बहुत प्यार करते हैं और वे हर साल जाड़े की छुट्टियों में भारत आने के लिए जिद करते हैं, पर आर्थिक कारणों से ऐसा संभव नहीं हो पाता! कुल मिलाकर, ऐसा लग रहा था कि भारत की महानता उनसे समेटी नहीं जा रही थीकृ यहाँ का मौसम, यहाँ की गंगा-जमुनी संस्कृति, यहाँ की नदियाँ, यहाँ के पहाड़, यहाँ के गुलाबों की खुशबू.... वाह! कितना अद्वितीय है! उन्होंने बताया कि वहाँ के गुलाबों में सिर्फ रंग होता है, खुशबू नहीं होती। खुशबू और रंग यहीं के गुलाबों में पाये जाते हैं। यह हमारी भारत माता की देन है!... उन्होंने लगभग शिक्षित करने के लहजे में बताया कि यहाँ के मन्दिर आत्मिक शान्ति प्रदान करने वाले हैं.... और शायद आपको मालूम हो कि भारत में टूरिज्म की सफलता का राज यहाँ के मन्दिर ही हैं। जितना 'फॉरेक्स' इंडिया को विदेशी पर्यटकों से मिलता है, उतना शायद किसी भी विकासशील देश को नहीं मिलता! उन्होंने बड़ी लाचारी व्यक्त करते हुए कहा कि अपना देश छोड़कर जाने का उनका मन तो नहीं होता, लेकिन इश्वर ने जहाँ उनकी कर्मभूमि बनायी है, वहाँ जाना ही पड़ेगाय कर्म तो करना ही पड़ेगा!.... एक बार फिर तालियाँ बज उठीं। श्रोताओं में से किसी ने चुटकी ली, *जब इतना देशप्रेम उमड़ रहा है, तो वहाँ क्या घुइयाँ छीलने जा रहे हो?* वे सुनकर भी नहीं सुनने का अभिनय कर रहे थे। आयोजक तिलमिलाकर रह गये थे। संचालक ने अध्यक्षीय वक्तव्य एवं काव्य-पाठ के लिए समारोह के अध्यक्ष को आहूत किया। इसके लिए उससे जितनी चापलूसी हो सकती थी, उसने पूरी ताकत से की। अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में बताया कि सम्मानित अतिथियों के लन्दन में बस जाने से भारत का गौरव बढ़ा है, क्योंकि लन्दन हो या वाशिंगटन, भारत की प्रतिभाओं के बिना वे पंगु हैं। उन्होंने पुलकित होते हुए बताया कि दुनिया के विकसित देशों में जितने वैज्ञानिक, डॉक्टर और इंजीनियर हैं, उनमें से चालीस प्रतिशत भारतीय मूल के हैं। और तो और, 'नासा' के आधे वैज्ञानिक भारत के ही हैं। इस प्रकार, वे भारत को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवा रहे हैं...हमें उनका आभारी होना चाहिए.... हम उनके आभारी हैं! संचालक ने तालियाँ बजाकर संकेत किया कि तालियाँ बजनी चाहिए। बजी भीं। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका था। अचानक श्रोताओं में से कहीं से आवाज आयी, *भैया, दो सौ साल पुरानी गुलामी है, पचास में कैसे चली जाए?* चाय-पानी के शोरगुल में यह बात वैसे ही गुम हो गयी थी जैसे विदेशी चमक-दमक में सम्मानित अतिथियों की भारतीयता!

हर्षोल्लास के साथ मनाई महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती

लोक पहल

शाहजहांपुर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती धूमधाम से मनाई गई। स्कूली बच्चों ने जीआईसी खेल मैदान से स्काउट गाइड द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई। सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों समेत शिक्षण संस्थाओं में राष्ट्र ध्वज फहराया गया और महापुरुषों की प्रतिमाओं व चित्रों पर माल्यार्पण कर नमन किया गया।

डीएम उमेश प्रताप सिंह, एसपी अशोक मीणा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, एडीएम प्रशासन संजय कुमार पांडेय, सिटी मजिस्ट्रेट आशीष कुमार सिंह ने गांधी भवन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर नमन किया। शहीद अशफाक उल्ला खां व अन्य शहीदों की मजारों पर जाकर चादरपोशी की गई।

कलक्ट्रेट परिसर में आयोजित समारोह में डीएम ने गांधी व शास्त्री के चित्रों पर सूत की बनाई माला से माल्यार्पण किया। चरखा चलाकर सूत काता। गुरुनानक स्कूल के छात्र-छात्राओं व कलक्ट्रेट कर्मचारियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुतियां दीं। कलक्ट्रेट परिसर से नशामुक्ति अभियान को लेकर जन जागरूकता रैली को डीएम ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और शपथ दिलाई। जनपद न्यायालय में जिला जज भानुदेव शर्मा ने ध्वजारोहण किया। इसके साथ ही स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया गया।

गोविंदगंज के गांधी आश्रम में राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार कठेरिया, सतीश चंद्र मिश्रा, विनोद गुप्ता, अक्षय तिवारी ने चरखा चलाकर सूत काता। कांग्रेस कार्यालय में गोष्ठी में जिलाध्यक्ष रजनीश गुप्ता ने गांधी के जीवन दर्शन पर चर्चा की। सेंट्रल बार एसोसिएशन की ओर से राजीव सभागार में अपर जिला जज प्रथम अरविंद राय, बार संघ अध्यक्ष ब्रजेश कुमार वैश्य व महासचिव सुधीर कुमार पांडेय ने महापुरुषों के चित्र पर माल्यार्पण कर विचार व्यक्त किए।

एसएस कालेज के अग्निवीर में चयनित एनसीसी कैडेट सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज में अग्निवीर में चयनित कालेज के एनसीसी कैडेटों को मेडल और पुरस्कार देकर सम्मनित किया गया। अग्निवीर चयनित छात्रों को सम्मानित करते हुए मुमुक्षु आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि शाहजहांपुर वीरों की भूमि है यहां के युवा स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद अनेक युद्धों में शहादत देकर देश के लिए प्राणों का वीरतापूर्वक बलिदान दे चुके है। जिससे यंहा के युबाओ में सेना मे भर्ती होकर देश के दुश्मनों से बदला लेने की जिजीविषा ओर भी तेज हुई है ओर बड़ी संख्या में युवक, युवतियां सेना की भर्ती की तैयारी में दिन रात पसीना बहा रहे हैं।

कालेज के सचिव प्रोफेसर एके मिश्रा ने कहा कि उनका प्रयास है कि वे भर्ती तैयारियों में जुटे युवाओं के लिए जल्द ही साइकोलाजी, न्यूट्रीशन के विशेषज्ञो की व्यवस्था कर उनकी भर्ती को सुनिश्चितता को बढ़ाने के प्रयास करेंगे। इस मौके पर प्राचार्य प्रो आरके आजाद, लेफ्टिनेंट आलोक कुमार सिंह, चयनित कैडेट आर्यन सिंह, शैलेन्द्र कुमार, धर्मवीर, शिवओम, वैभव वर्मा, विकास बाबू, उत्कर्ष, पंकज गिरि, विकास कुमार सिंह, शिशुपाल, सचिन सिंह और परविंदर पाल आदि ने अग्निविर बनकर कालेज का नाम रोशन किया है।

क्षत्रिय महासभा के पदम सिंह जिलाध्यक्ष व मुनीश सिंह परिहार महासचिव बने

शाहजहांपुर (लोक पहल)। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का ब्रज प्रदेश का मथुरा में आयोजित सम्मेलन में पदम सिंह को जिलाध्यक्ष व महासचिव पद पर मुनीश सिंह परिहार, बरेली मंडल बरेली के अध्यक्ष पद पर पवन कुमार सिंह, ब्रज प्रदेश के मीडिया प्रभारी पद के लिए सत्यवीर सिंह चौहान को मनोनीत किया गया। शाहजहांपुर में 28 अक्टूबर को विशाल क्षत्रिय पंचायत-समागम के आयोजन का निर्णय भी लिया गया। इस मौके पर ओमकार सिंह (सिंधौली), विजय प्रताप सिंह, अजय सिंह पिंटू, प्रीतम सिंह पुजारी, रामकुमार सिंह चौहान, अमित प्रताप सिंह, उदित प्रताप सिंह, सुमित सिंह भदौरिया, भूपेंद्र सिंह प्रदीप सिंह, रामवीर सिंह सोमवंशी, योगेंद्र सिंह सोमवंशी, आशीष सिंह भदौरिया, अनुराग सिंह, लखपत सिंह, उदय प्रताप सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

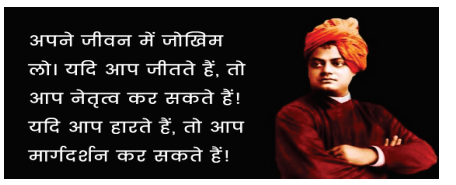

'गज़ल गुफ्तगू' में गीत, गज़लों ने श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

तुलसीर मीर फाउंडेशन के आयोजन में देश के शायरों-कवियों ने पेश की अपना रचनाएं

लोक पहल

शाहजहांपुर। तुलसी- मीर फ उंडेशन के तत्वावधान में गांधी भवन प्रेक्षाग्रह में एक मुशायरा 'गजल गुफ्तगू' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एसडीएम तिलहर कपिल देव सिंह यादव व विशिष्ट अतिथि बीएसए रणवीर सिंह ने कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। सभी अतिथियों का स्वागत सुमीत पाठक ने किया। मुशायरे का शुभारंभ विकास सोनी ऋतुराज ने वाणी वंदना से किया, शायर फ्हीम बिस्मिल ने नात पढ़ी।

मुशायरे में बदायूं के शायर फहमी बदायूंनी, बरेली के शारिक कैफी, दिल्ली के जावेद मुशीरी, ऊधम सिंह नगर के डॉ राहील सकलैनी, चंदौसी के शायर विनीत आशना, शाहजहांपुर के वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान', कवि सुमीत पाठक, कानपुर की शायरा चांदनी पांडे, बरेली के युवा शायर आशू मिश्रा, चंदौसी के चराग शर्मा, लखनऊ के हर्षित मिश्रा, इशरत सगीर, वाराणसी के विक्रम गौर वैरागी, शाहजहांपुर के रितेश सिंह 'राहिल' ने अपने गीत और गजलों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आयोजन में तुलसी-मीर फाउन्डेशन के उपाध्यक्ष कवि पीयूष शर्मा और कवि विकास शर्मा 'पारस', कवि अभिषेक ठाकुर 'अधीर' और आतिश मुरादाबादी का विशेष योगदान रहा। इस दौरान इंदु अजनबी, अमित त्यागी, लेफ्टिनेंट मोहम्मद अयूब, इकबाल हुसैन फूल मियां, सर्वेश मिश्र धांधू, सैफअसलम खान, प्रशांत देव बाजपेयी, राहुल मिश्रा लालित्य पल्लव, अजय अवस्थी, राशिद राही, लतीफ अहमद, शमीम आजाद, अतीक अहमद, राजमोहन पाठक, आदि मौजूद रहे।

एसएस कालेज में गांधी एवं शास्त्री को किया नमन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ कविता भटनागर के द्वारा राष्ट्रगान से हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने कहा कि गांधी जी एवं शास्त्री जी ऐसे महापुरुष थे जिनके जीवन दर्शन को यदि हम अनुसरण करने लगें, तो निस्संदेह महानता के शिखर की ओर उन्मुख होकर एक न एक दिन उसे स्पर्श कर लेंगे। उन्होंने कहा कि सत्य व अहिंसा ऐसे अमोघ अस्त्र हैं जिनसे बिना किसी क्षति के संपूर्ण विश्व का कल्याण किया जा सकता है। डॉ आदित्य कुमार सिंह ने कहा कि गांधीजी एवं शास्त्री के गुणों को हम अपने जीवन में उतारने का थोड़ा भी प्रयास कर लें, तो हम अपना जीवन धन्य कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ आलोक सिंह ने किया। गर्राघाट पर स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर भी पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ मीना शर्मा, डॉ रीता दीक्षित, डॉ प्रतिभा सक्सेना, डॉ मधुकर श्याम शुक्ला, डॉ अजीत सिंह चारग, डॉ देवेंद्र सिंह, डॉ कमलेश गौतम, डॉ शिशिर शुक्ला, डॉ रामनिवास गुप्ता, डॉ प्रांजल शाही, कमलेश त्रिवेदी, झरना रस्तोगी, उमाशंकर शर्मा, रामबाबू सहित सभी शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं एनसीसी के कैडेट उपस्थित रहे।

बंटवारे के दंश की यादें ताजा कर गया नाटक 'जिस लाहौर नई देख्यां'

निर्देशक शमीम आजाद के कुशल निर्देशन में कलाकारों ने किया भावपूर्ण अभिनय

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रसिद्ध नाटककार असगर वजाहत के चर्चित नाटक 'जिस लाहौर नई देख्यां...' का मंचन अभिव्यक्ति नाट्य मंच के बैनर तले गांधी भवन प्रेक्षागृह में किया गया। देश के बंटवारे की मार्मिक और दर्दनाक कहानी पर आधारित नाटक में कलाकारों के भावपूर्ण मंचन से कई बार दर्शकों की आंखे नम हो गई। मूल रूप से भारत पाकिस्तान के बंटवारे की पृष्ठभूमि पर आधारित असगर वजाहत का नाटक 'जिस लाहौर नई देख्यां...' का निर्देशन वरिष्ठ रंगकर्मी शमीम आजाद ने किया। नाटक में धार्मिक कट्टरता और इंसानियत के बीच कभी न खत्म होने वाले संघर्ष को भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया। नाटक मुख्य रूप से लाहौर की एक हिन्दू बुजुर्ग महिला मांई पर केन्द्रित है। नाटक में बंटवारे का दंष झेलने वाले लोगों की मनास्थिति को उकेरने का सफ्ल प्रयास किया गया। नाटक में दिखाया गया कि लखनऊ से विस्थापित होकर लाहौर पहुंचे एक मिर्जा साहब को एक हवेली एलाट हो जाती है। उस हवेली में एक हिन्दू महिला मांई रहती है। शुरूआत में मिर्जा साहब चाहते हैं कि यह बुढ़िया मर खप जाए और पूरी हवेली पर उनका कब्जा हो जाये लेकिन धीरे-धीरे नेकदिल इंसान मिर्जा साहब का हृदय परिवर्तन होने लगता है और मांई का उनके साथ और उनके परिवार के साथ किया गया व्यवहार उन्हें भी मांई को मां मानने के लिए मजबूर कर देता है।

प्रसिद्ध नाटककार असगर वजाहत का यह नाटक धर्म से अलग मानवीय मूल्यों को तरजीह देता है नाटक का एक संवाद...नंगा आदमी न हिन्दू होता है और न मुसलमान ने दर्शको को अंदर झजकोर दिया। अभिनय की दृष्टि से नाटक के सभी पात्रों ने अपने किरदार को जीने की पूरी कोशिश की। सभी कलाकारों ने अपने पात्रों के अनुसार अपना अभिनय में जान डाल दी। मंच पर राजेश भारती, ऊषा सक्सेना, नेहा, प्रियंका रंजन, अभिशांत पाठक, ओमवीर सिंह, शैलेन्द्र कुमार, देव मिश्रा, हर्षवीर, अभय कष्यप, रोहित, शिवम, अभिषेक, देवा व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से पास आउट शालू यादव प्रमुख भूमिकाओं में रहे।

पात्र परिचय डा. सुरेश मिश्रा ने कराया, मंच परे कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, विनोद दौलतावाद, अरविन्द चोला, रिजवान, अनुराग ठाकुर, रिषिकांत, राम प्रताप, हरजीत सिंह, आशू, अरूण कुमार, अन्नपूर्णा गुप्ता, पुनीत शर्मा, प्रभा मौर्या, अभिषेक कुमार आदि का विशेश सहयोग रहा। दर्शकों में प्रमुख रूप से जरीफ मलिक आनंद, जसवंत सिंह बजाज, सर्वेश मिश्रा धांधू, ज्ञानेन्द्र मोहन ज्ञान, मनोज मंजुल, बलराम शर्मा, अरशद आजाद, शोभित गुप्ता, शिवा सक्सेना, राजीव कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।